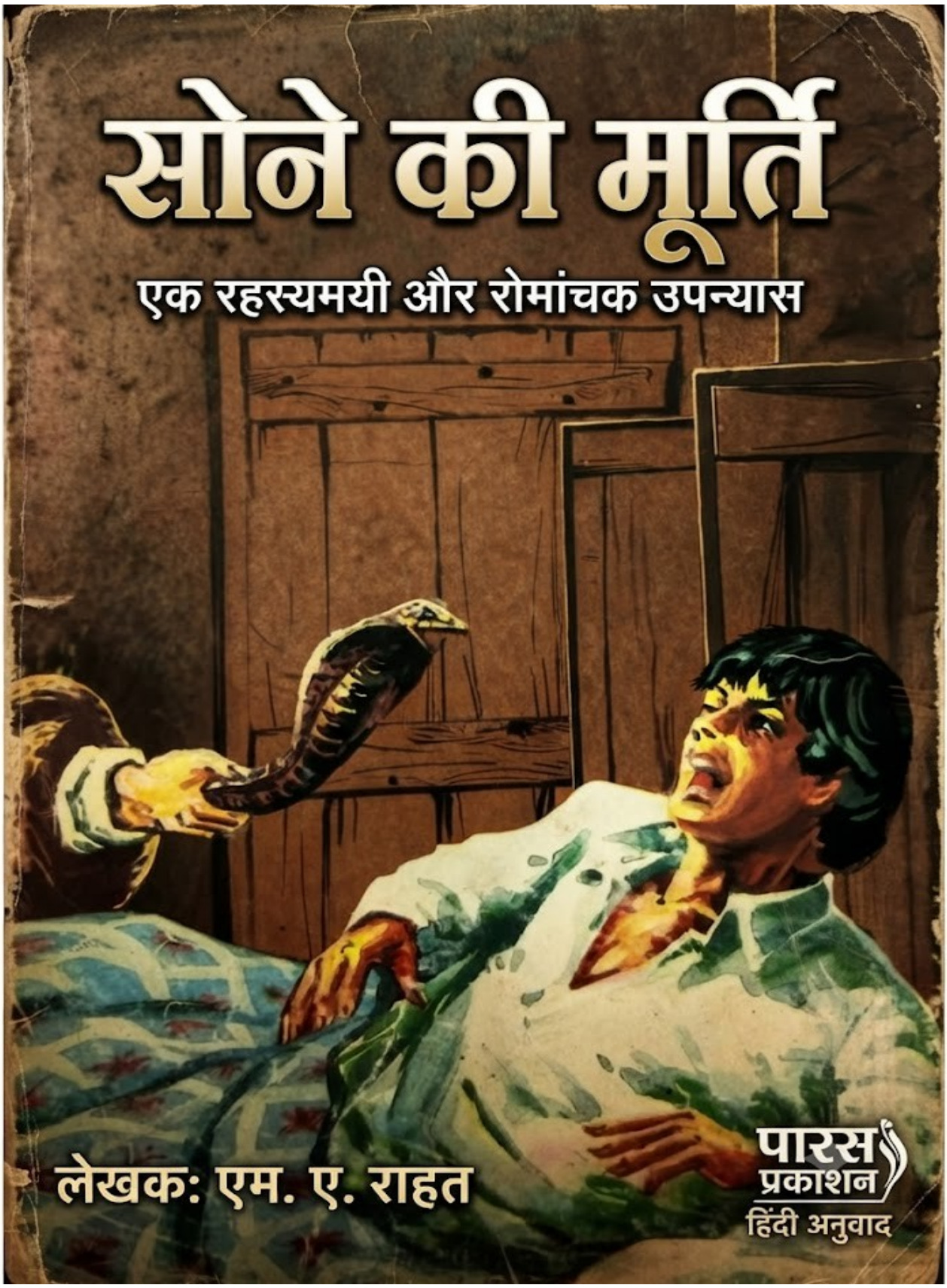
सोने की मूर्ति
एक रहस्यमयी और रोमांचक उपन्यास
लेखक: एम. ए. राहत
पारस प्रकाशन
हिंदी अनुवाद

आमिर और अमार के कारनामे

सोने की मूर्ति

बच्चों के लिए उपन्यास

बाबर लाइब्रेरी, और केम्पेनियन محلہ جہانگیر آباد، ملک شیخوپورہ (मोहल्ला जहांगीराबाद, मलिक शेखूपुरा) 0322-1274483

मकसूद अयाज

फिरोज संस (प्राइवेट) लिमिटेड लाहौर - रावलपिंडी - कराची

(रहस्यमय चोरी)

गुप्तचर पुलिस के डी.आई.जी. शहाब जैदी पाकिस्तान के उन गौरवशाली पुत्रों में से हैं जिनकी क्षमताओं का लोहा न सिर्फ पाकिस्तान बल्कि दुनिया के बहुत से देश मानते हैं। उन्होंने जासूसी की शिक्षा इंग्लैंड के प्रसिद्ध संस्थान स्कॉटलैंड यार्ड से प्राप्त की थी जो जासूसी के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है।

उनकी क्षमताओं को देखते हुए उन्हें इंग्लैंड में उच्च नौकरी की पेशकश की गई थी लेकिन वह पाकिस्तान के प्रेम और अपनी जाति/देश की सेवा को ध्यान में रखते हुए उसे ठुकराकर पाकिस्तान चले आए और यहाँ कराची में उन्हें गुप्तचर पुलिस के डी.आई.जी. के पद पर नियुक्त कर दिया गया।

उनके बेटे आमिर और अमार पढ़ाई के साथ-साथ अपने पिता का हाथ भी बंटाते हैं और अब तक कई खतरनाक अपराधियों को पकड़कर कानून के हवाले कर चुके हैं। शहाब साहब न सिर्फ छोटे-मोटे केस बल्कि कई बड़े और मुश्किल केस भी उनके सुपुर्द कर देते हैं और दोनों भाई अपने पिता के साथ मिलकर उन मामलों को सुलझा लेते हैं।

और उनका नाम रोशन कर रहे हैं।

आजकल गर्मियों की छुट्टियाँ होने के सबब स्कूल बंद हैं, और दोनों भाइयों ने अपने पिता जी के साथ किसी पहाड़ी जगह पर छुट्टियाँ गुजारने का प्रोग्राम बनाया था। लेकिन ऐन वक्त पर संयुक्त राष्ट्र ने पाकिस्तान से ज़ैदी साहब की सेवाएँ हासिल कर लीं। दरअसल संयुक्त राष्ट्र के एक देश ने अपने देश में बगावत की साज़िश को कुचलने के लिए इस वैश्विक संस्थान से दरख्वास्त की थी, और शहाब साहब को एक द्वीप के किनारे पर स्थित रूबासा रवाना कर दिया गया था जो बागियों का मुख्यालय था। एक करीबी द्वीप मिल बिन की हुकूमत बागियों की मदद कर रही थी और इसी द्वीप के रास्ते हथियार रूबासा के बागियों के पास पहुँच रहा था।

अब आमिर और अमार ये छुट्टियाँ कराची में हॉकी की प्रैक्टिस करके गुजार रहे थे, और कई दिनों से पिता की खैरियत मालूम करने के लिए बेचैन थे, जिन्होंने कराची से रवाना होने के बाद से अब तक अपने घर कोई इत्तिला नहीं दी थी। उनकी फूफू मंसूरा और वालिदा भी परेशान थीं। चूँकि इनकी वालिदा अक्सर बीमार रहती थीं इसलिए उन्होंने घर का इंचार्ज अपनी नन्द मंसूरा को ही बना रखा था। नन्द और भाभी में भी बहुत मुहब्बत थी और इस लिहाज से यह घर जन्नत बना हुआ था। जिस घर में इत्तेफाक और मुहब्बत हो वह जन्नत ही तो होता है।

आमिर और अमार अपनी कोठी के लोन में अपने दोस्तों नसीर और इरफ़ान के साथ हॉकी की प्रैक्टिस कर रहे थे कि अचानक खिड़की से उनकी फूफू ने पुकारते हुए कहा: "बेटे आमिर..... अमार..... जल्दी आओ, तुम्हारे अब्बू की ट्रंक काल है।"

पिता की काल सुनते ही दोनों भाई लाउंज की तरफ भागे और फिर जल्दी से आमिर ने रिसीवर उठाकर कहा: "हेलो!... अब्बू!... मैं आमिर बोल रहा हूँ। आप कहाँ हैं? आपने कोई इत्तिला ही नहीं दी। अम्मी और फूफू जान भी फिक्रमंद हैं।"

दूसरी तरफ से शहाब जैदी ने अपनी गरजदार आवाज़ में जवाब दिया "मैं खुदा के फजल से खैरियत से हूँ और आजकल रूबासा में हूँ। संयुक्त राष्ट्र की तरफ से मुझे एक खास केस के सिलसिले में यहाँ भेजा गया है।"

शहाब साहब बात करते-करते रुके ही थे कि आमिर ने कहा "अब्बू, हमारे लायक कोई सेवा हो तो फरमाएँ। बेकार बैठे-बैठे बोर हो रहे हैं।"

शहाब जैदी ने जवाब दिया "मुझे एहसास है। इसलिए तुम्हें फोन किया है। गौर से सुनो। कोलंबो के अजायब घर के इंचार्ज मिस्टर सदारत इंग्लैंड में मेरे क्लास फेलो रहे हैं। तुम्हें पता है कि कोलंबो श्रीलंका की राजधानी है। उन्होंने अभी मुझे फोन पर इत्तिला दी है कि उनके अजायब घर में मौजूद महात्मा बुद्ध की पाँच सोने की मूर्तियाँ चोरी हो गई हैं और श्रीलंकाई पुलिस उनका सुराग लगाने में नाकाम रही है। आखिर हर तरफ से मायूस हो कर सदारत ने श्रीलंका की हुकूमत को पाकिस्तान से मुझे भेजने की दरख्वास्त की। लेकिन चूँकि मुझे संयुक्त राष्ट्र की तरफ से एक खास मिशन सुपुर्द किया गया है, लिहाजा मैंने यहाँ मौजूद पाकिस्तान के राजदूत को राय दी है कि मेरी बजाय तुम दोनों को इस चोरी का सुराग लगाने के लिए श्रीलंका भेज दिया जाए। मेरा ख्याल है जल्दी ही पाकिस्तानी सरकार की तरफ से तुम्हें श्रीलंका भेज दिया जाएगा।"

"दैट इज़ ग्रेट, अब्बू! यह सफर हमारे लिए बेहतरीन मजे का होगा और हम इंशाल्लाह चोरों से मूर्तियाँ बरामद करके आपका और अपने देश का नाम रोशन करेंगे," आमिर ने कहा।

"शाबाश, बेटा! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी," शहाब साहब ने जवाब दिया। "अच्छा तो अब अलविदा। मैं तुम दोनों की सफलता के लिए प्रार्थना करता हूँ।"

फोन रखते ही आमिर ने खुश होकर अमार की तरफ देखा जो अपना कान फोन के साथ लगाए हुए पिता की बातचीत सुन रहा था।

कोलंबो का अजायब घर

तीन दिन बाद जब वे श्रीलंका की राजधानी कोलंबो के हवाई अड्डे पर उतरे तो एक कार उनकी प्रतीक्षा कर रही थी, जिसमें उन्हें अजायब घर की विशाल इमारत तक पहुँचा दिया गया। अजायब घर के प्रबंधक मिस्टर सदारत अपने दफ्तर में बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने अपना परिचय कराते हुए कहा:

"मुझे सदारत कहते हैं और मैं ही इस अजायब घर का इंचार्ज हूँ। तुम्हारे पिता जी मेरे सबसे अच्छे दोस्तों में से हैं। मुझे तुम दोनों से मिलकर बहुत खुशी हुई।"

"हमें भी आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। मेरा नाम आमिर है और यह मेरा छोटा भाई अमार है," आमिर ने जवाब दिया।

"बेटे, कोई ठंडा या गर्म पेय, जो तुम दोनों पसंद करो..." सदारत ने कहा।

आमिर ने नरमी से जवाब दिया, "शुक्रिया, अंकल! हम काम के समय सिर्फ काम करते हैं। उस समय हमें भूख और प्यास का कोई अहसास नहीं होता।"

"अच्छा! तुम्हारे पिताजी की भी यही आदत है," सदारत ने कहा, और फिर उन्हें चोरी के संबंध में बताते हुए बोला, "सबसे पहले इस एल्बम में चोरी होने वाली मूर्तियों के फोटो देखो। ये पाँच मूर्तियाँ एक ही रात में चोरी हुई हैं।"

"आपके अजायब घर में कोई ऐसा अलार्म मौजूद नहीं है जो चोर के आने पर अधिकारियों को सूचित कर सके?" आमिर ने सदारत से सवाल किया।

"है क्यों नहीं। लेकिन शायद चोर ने इसे पहले ही बंद कर दिया था, इसलिए चौकीदार को खतरे से खबरदार नहीं किया जा सका," सदारत ने जवाब दिया।

"इसका मतलब यह है कि चोर को इस अलार्म के बारे में जानकारी थी और यही बात साफ जाहिर करती है कि चोर बाहर का नहीं बल्कि कर्मचारी वर्ग का ही कोई व्यक्ति है," अमार ने कहा।

सदारत ने अमार की बुद्धिमत्ता की तारीफ की और फिर बोला, "तुमने भी वही सोचा जो मैं पहले ही सोच चुका हूँ। इस घटना के बाद मैंने अलार्म का सिस्टम पूरी तरह गुप्त कर दिया है। अब इस कनेक्शन के बारे में मेरे सिवाय किसी को भी जानकारी नहीं है। लेकिन यह काम चोरी के बाद हुआ है। इसलिए किसी समझदार व्यक्ति की इस कहावत के अनुसार कि 'युद्ध समाप्त होने के बाद याद आया उपाय', उसे अपने ही मुँह पर मार लेना चाहिए।"

आमिर ने सवाल किया, "यहाँ की पुलिस का इस चोरी के संबंध में क्या ख्याल है?"

"मकड़ी के जाले की तरह उनकी जाँच-पड़ताल फैलती जा रही है। उन्होंने तो यहाँ के कर्मचारियों को पूरी तरह निर्दोष करार दिया है। बेहतर है कि तुम अपने अंधेरे े से इस मामले को हल करने की कोशिश करो।"

"तो फिर सबसे पहले उस चौकीदार को बुलाइए जो उस रात ड्यूटी पर मौजूद था," अमार ने कहा।

सदारत ने इंटरकॉम पर किसी से कहा, "अहमद खफाश को मेरे दफ्तर में भेज दो।"

फिर उसने अपने पाइप में तंबाकू भरा और उसे सुलगाकर मुँह से धुआँ छोड़ने लगा। उसी समय एक व्यक्ति...

नाटे कद और काले रंग का नौजवान अंदर दाखिल हुआ। कसरती जिस्म होने के बावजूद वह काँप रहा था। उसने मुर्दह सी आवाज़ में कहना शुरू किया:

"उस रात में अकेला ड्यूटी पर था। न तो मैंने कोई आहट सुनी और न अलार्म की आवाज़। रात के आखिरी पहर में मैंने इन पाँचों मूर्तियों को वहाँ मौजूद पाया मगर सुबह के वक्त वहाँ से गायब थीं।"

सदारत ने बताया, "उस रोज रात की ड्यूटी वाला दूसरा चौकीदार बीमार था, इसलिए खफाश को तन्हा यह ड्यूटी अंजाम देनी पड़ी और शायद इसी बात से फायदा उठाते हुए चोर को मौका मिल गया। पुलिस ने भी इसे बेकसूर समझते हुए नजरअंदाज कर दिया है।"

खफाश के जाने के बाद सदारत ने आमिर को बताया।

उसी वक्त दूर दीवार अलार्म की आवाज़ से गूँज उठे और एक छोटा सा सुर्ख बल्ब फोन के करीब रखे हुए टेबल लैंप में स्पार्क करने लगा। सदारत ने हैरत से कहा:

"मेरा खुफिया अलार्म बज रहा है! इसका मतलब है कि कोई दोबारा उसी कमरे में चोरी की नीयत से गया है।"

यह कहकर वह भागता हुआ कमरे से बाहर निकल गया। आमिर और अमार ने उसका पीछा किया और फिर तीनों आगे पीछे भागते हुए उस हॉल में दाखिल हुए जहाँ पूरी दुनिया की वेशकीमती चीजें रखी हुई थीं। उन्होंने हैरत से खफाश को देखा जो एक दीवार के पास खड़ा था। उसके हाथ में हीरों के दस्ते वाला एक खंजर था जो पुराने जमाने के किसी राजा का होगा और जो उस दीवार के साथ लगा हुआ था। उसके चेहरे पर अजीब व गरीब भाव थे। सदारत ने अंदर दाखिल होते ही सख्ती के साथ पूछा:

"तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारी ड्यूटी तो कमरे के बाहर है, अंदर नहीं। और तुम्हारे हाथ में यह खंजर देखकर मैं क्या समझूँ?"

खफाश ने बड़ी नर्मी के साथ जवाब दिया, "जी बात दरअस्ल यह है कि जिस खूँटी के साथ यह खंजर दीवार में फिट किया गया था, वह ढीली हो गई है। मैं इस खूँटी को ठीक करना चाहता हूँ।"

यह कहने के बाद खफाश ने दोबारा खंजर को उसकी जगह पर रखा और तेजी से कमरे से निकल गया।

"मेरा ख्याल है, इसे अलार्म के मुतअलिक कुछ इल्म न था। आज से पहले यह कभी इस कमरे के अंदर नहीं गया," सदारत ने कहा।

अमार ने दीवार के पास जाकर उस खूँटी का मुआयना किया जो बकौल खफाश ढीली हो चुकी थी। लेकिन उसे यह देखकर हैरानी हुई कि खूँटी ठीक हालत में थी। उसने कहा:

"मेरी राय यह है कि मिस्टर अहमद खफाश ने किसी खास जरूरत के लिए इसे दीवार से उतारा था। और अगर उसने चोरी के इरादे से ऐसा किया है तो उससे बड़ा बदनसीब कोई नहीं।"

सदारत ने पसीने से भरे हुए हाथों को रूमाल से साफ़ करते हुए जवाब दिया, "यह बेहतर होगा कि अब हम दफ्तर चल कर बैठें? मुझे अपने दोनों असिस्टेंटों का इंतजार है - एक का नाम जोन है और दूसरे का- जमाल अनवर , जमाल अनवर खफाश का हमवतन है। दोनों मिस्र के बाशिंदे हैं।"

इसके बाद वह अपने दफ्तर में चला गया और इंटरकॉम.. पर .

अपने दोनों सहायकों के संबंध में पूछताछ करने पर उसे पता चला कि वे दोनों मिस्र जाने वाले जहाज़ में सामान की बुकिंग के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए माल डिपो (कारगो कार्यालय) गए हुए हैं।

"उनको आ जाने दो - मैं तुम्हें एक अजीब ओ गरीब चीज़ दिखाता हूँ," सदारत ने आमिर और अमार से कहा।

"और ऐसी कौन सी चीज़ है?" अमार ने सवाल किया।

"दो हज़ार साल पुरानी एक आदमकद सोने की मूर्ति जिसमें महात्मा बुद्ध खड़े होकर आसमान की तरफ देख रहे हैं - यह एक प्राचीन बौद्ध मंदिर से चोरी हो गई थी - लेकिन कुछ रोज़ बाद चोर खुद ही इसे वापस लौटा गए थे," सदारत ने जवाब दिया।

"और आखिर क्यों?" आमिर ने सवाल किया।

"शायद तुम यकीन न करो - उन चोरों का बयान था कि इस मूर्ति ने हमें हुक्म दिया था कि मुझे फौरन अपनी जगह रख आओ वरना तुम मेरे बदले का शिकार बन जाओगे।"

"संभव है यह ठीक हो, लेकिन हम इन बातों पर विश्वास नहीं करते - मूर्ति पत्थर की हो या सोने की, वह निर्जीव और अहानिकर होती है - जो चीज़ चुराई जा सकती है, वह बदला कैसे ले सकती है - यह बात हवा में उड़ाई गई है और किसी धार्मिक उन्मादी ने फैलाई है," अमार ने हंस कर कहा।

आमिर ने बीच में बात काटते हुए कहा, "संभव है यह बौद्ध धर्म के मानने वालों का प्रचार (प्रोपोगंडा) हो."

सदारत ने विषय बदलकर कहा, "वे दोनों उस मूर्ति को लेकर मिस्र जा रहे हैं."

"भला फिरौन की इस धरती पर मूर्तियों की कोई कमी है कि उनमें एक और मूर्ति का इज़ाफा (बढ़ोत्तरी) किया जा रहा है?" अमार बोला।

सदारत ने ज़रा झेंपते हुए स्पष्ट किया, "एक तो खुद इस मूर्ति की इच्छा थी कि उसे फिरौन के साथ काहिरा के अजायब घर की शोभा बनाया जाए, क्योंकि मूर्ति या चोरों के कथनानुसार, महात्मा बुद्ध की इस मूर्ति ने उनसे कहा था - 'मैंने दुखी इंसानों की सेवा के लिए ताज और तख्त को ठुकरा दिया था - लेकिन मरने के बाद मुझे शाश्वत (अमरी) बादशाही प्रदान कर दी गई है - इसलिए मेरी मूर्ति दुनिया के महान बादशाहों - फिरौन की ममी के साथ रखी जाए' - अतः मिस्र की सरकार ने एक भारी रकम के बदले इस मूर्ति को खरीद लिया है, और श्रीलंका की सरकार ने मेरे विभाग से कहा है कि इसे सुरक्षा के साथ काहिरा के अजायब घर पहुँचा दूँ ताकि वह फिरौन की ममी के साथ रख दी जाए।"

"खैर, हमें इससे क्या मतलब - हम तो यहाँ चोरी हुई मूर्तियां बरामद कराने आए हैं - लेकिन अब इस मूर्ति को ज़रूर देखेंगे जो बोलती भी है और अपनी इच्छाओं का इज़हार भी करती है," आमिर ने कहा।

"क्या यह बेहतर न होगा कि हम आपके सहायकों के आने से पहले ही इस मूर्ति का दर्शन कर लें?" अमार ने व्यंग्य से कहा।

उसके व्यंग्य को महसूस करते हुए सदारत ने जवाब दिया, "बेटे, मुसलमान होने की वजह से तुम्हारा विश्वास मूर्ति पर नहीं है - लेकिन हम लोग इस बात पर विश्वास रखते हैं कि हमारे आध्यात्मिक गुरु यानी महात्मा बुद्ध को यह शक्ति प्राप्त थी और हजारों साल गुजरने के बाद अब भी है कि वह अपनी आत्मा जिस चीज़ में चाहे, प्रवेश कर सकता है। उसके मुँह से निकले हुए शब्द, चाहे वे उसकी मूर्ति के होठों से ही क्यों न कहे गए हों, पत्थर की लकीर होते हैं - तुम्हें अभी इसका अनुभव नहीं है - बहरहाल," अब आओ मैं तुम्हें वो मूर्ति दिखा दूँ।

अजीब बात!

वह एक बड़ी सी राहदारी से गुजरने के बाद सीढ़ियाँ उअंधेरे र एक तहखाने में चले गए जिसके बाहर पहरा था। तहखाने में रोशनी का पूर्ण इंतज़ाम था। यहाँ से तीनों एक संगमरमर के बने हुए कमरे में दाखिल हो गए, जहाँ से लोबान की खुशबू आ रही थी। कमरे के बीच में एक चबूतरे पर महात्मा बुद्ध की एक मूर्ति खड़ी थी जिसके चेहरे पर तेज और आँखों में चमक थी।

सदारत ने झुककर मूर्ति को सम्मान दिया क्योंकि उसका संबंध बौद्ध धर्म से था, और फिर आमिर और अमार से कहा "ये है, महात्मा बुद्ध की वो मूर्ति!"

आमिर और अमार ने मूर्ति के चारों तरफ घूमकर इसका मुआयना किया। फिर इसे छूकर देखा - वह ठोस सोने की बनी हुई थी।

इसके बाद दोनों सदारत के साथ वापस दफ्तर में आ गए, जहाँ दो नौजवान सदारत के प्रतीक्षारत थे। उनमें से एक तो लंबा, दुबला-पतला, सांवले रंग का था और दूसरा सुडौल जिस्म और सफेद रंग का ज़रा भारी सा था। सदारत ने उन दोनों का परिचय कराते हुए कहा:

"ये हैं मेरे सहायक जमाल अनवर - इनका संबंध मिस्र से है - और ये हैं जॉन, क्रिश्चियन हैं और यहाँ के स्थानीय बाशिंदे भी।" आमिर और अमार ने बारी-बारी दोनों से हाथ मिलाया और खुशी और प्रसन्नता का इज़हार किया।

"हमने एक समुद्री जहाज़ में मूर्ति के लिए बुकिंग करवा दी है," जॉन ने कहा।

सदारत अपना पाइप जलाते हुए बोला "गुड! ये तो बहुत अच्छा हुआ।"

जॉन ने कहा "मैंने मूर्ति के लिए एक लकड़ी की पेटी बनवाई है जिसके ऊपर सुरक्षा के ख्याल से तांबे के पतरे जड़ दिए जाएंगे ताकि इसे आसानी से खोला न जा सके।"

"ये तो बहुत ही अच्छी बात है। सरकार की तरफ से आर्डर हुआ है कि इस मूर्ति को काहिरे पहुँचाने का काम जमाल अनवर के सुपुर्द किया जाए - इसलिए कि ये मिस्र के रहने वाले हैं और समुद्री रास्तों से भी वाक़िफ़ हैं। मिस्टर जमाल अनवर , मिस्र जाने की तैयारी करो और मिस्टर जॉन, तुम ने जैसा कहा है, मूर्ति की पैकिंग का काम अंजाम दो - मुझे तुरंत सरकारी काम से अंधेरे ी जाना है - इसलिए अब ये तुम दोनों की ड्यूटी है। आमिर और अमार को भी मूर्तियों की चोरी के सिलसिले में तुम्हारी मदद की ज़रूरत पड़ेगी।"

इसके बाद सदारत रुख़सत हो गया, जॉन भी एक ज़रूरी फोन करने चला गया, और कमरे में आमिर, अमार और जमाल अनवर ही रह गए।

"मेरा ख्याल है, चोरी के सिलसिले में सबसे पहले खफाश को गिरफ्तार करना चाहिए - वही चोर हो सकता है," जमाल अनवर बोला।

"मेरे दोस्त, ये मुमकिन नहीं - इसलिए कि हमारे पास उसके ख़िलाफ़ कोई सबूत नहीं है - हालाँकि हम ने एक बार शाही खंजर को उसके हाथ में देखा भी है - फिर भी हम उसे चोर साबित नहीं कर सकते," आमिर ने कहा।

"अगर वाकई वो चोर है तो उसे दोबारा चोरी करने

का मौका देना चाहिए," अमार बोला।

उसी वक्त जॉन अंदर दाखिल हुआ और बोला "मैंने मूर्ति की पैकिंग का इंतज़ाम कर दिया है - तुम जाने की तैयारी करो।"

"मेरे भाई, जो मूर्ति अपने ख्यालों का प्रकटीकरण कर सकती है, उसे जहाज़ की बजाय खुद परवाज़ करके जाना चाहिए," अमार बोला।

"आप को मूर्ति के बारे में ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए," जॉन ने चिंता के अंदाज़ में कहा "आप इस की तारीख़ से वाक़िफ़ नहीं - अब तक कई लोग इसके बदले का निशाना बन चुके हैं।"

"मस्टर जॉन, आप फ़िक्र न करें - ये मूर्ति हमें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकती," अमार ने कहा।

"ख़ैर," जॉन ने नाराजगी से जवाब दिया "मैं इस सिलसिले में आप से बहस नहीं करना चाहता - सिर्फ़ इतना कहना ही मुनासिब समझता हूँ कि श्री लंका के बाशिंदों की ।बहुसंख्या बौद्ध मज़हब के मानने वालों की है - वो बुद्ध की मूर्ति का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकते - दूसरे, आप का ताल्लुक़ इस मूर्ति से नहीं बल्कि चोरी की वारदात से है - इस सिलसिले में आप ने क्या कुछ किया है?"

"फिलहाल तो हमारे सामने सिर्फ़ चौकीदार खफाश ही है - लेकिन इसके ख़िलाफ़ अभी तक कोई सुबूत नहीं मिल रहा - आप का इस के मुतअलिक क्या ख्याल है, मस्टर जॉन?"

"मेरा ख्याल है, हमें एक कप कॉफ़ी पीना चाहिए," जॉन ने जवाब दिया। "साथ-साथ विचार-विमर्श भी होता रहेगा - आप दोनों का क्या ख्याल है?"

आमिर ने जवाब दिया "हम दोनों को कोल्ड ड्रिंक लेना पसंद करेंगे - मैंने हॉल में कोक की मशीन लगी देखी है।"

आमिर बाहर गया और मशीन से दो कोक ले आया। उसने एक खुद लिया और दूसरा भाई के हवाले कर दिया। इसी दौरान में अजायब घर की रसोइया एलिस मुस्कुराती हुई कमरे में दाखिल हुई। उसने बड़ी ट्रे उठा रखी थी जिसमें कॉफ़ी के दो कप रखे हुए थे। एलिस ने जॉन और जमाल अनवर के आगे कप रखते हुए आमिर और अमार की तरफ देखा और कहा:

"मैं आप की क्या ख़िदमत कर सकती हूँ?"

"शुक्रिया," अमार ने जवाब दिया "किसी चीज़ की ज़रूरत होगी तो बुला लेंगे।"

एलिस मुस्कुराती हुई चली गई और कमरे का दरवाज़ा बंद हो गया। जॉन ने कॉफ़ी की चुस्की लेते हुए आमिर से कहा "पुलिस यहाँ के स्टाफ़ से पूछ-ताछ कर चुकी है - उनका ख्याल है कि स्टाफ़ में से कोई चोर नहीं।"

"आश्चर्य की बात तो ये है कि कमरे के बाहर ताला लगा हुआ था - अंदर जाने का कोई और रास्ता भी नहीं - फिर भी मूर्तियाँ गायब हो गईं," जमाल अनवर बोला और जल्दी-जल्दी कॉफ़ी के बड़े-बड़े घूँट लेने शुरू कर दिए। जॉन ने अपनी राय देते हुए कहा "अभी तक पुलिस किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी।"

आमिर हँसते हुए बोला "भई , वास्तव में आप की मूर्तियाँ भी अजीब व गरीब हैं - मुमकिन है पाँचों मूर्तियों ने आपसी सलाह किया हो और खुद ही कहीं गायब हो गई हों।"

जॉन ने नाराजगी) से कहा "आप लोग मूर्तियों का लगातार अपमान कर रहे हैं - भगवान आपको इसके बदले से बचा के रखे ।"

उसी वक्त उन्होंने जमाल अनवर के हलक़ से अजीब से आवाज़ें निकलीं - दोनों ने आश्चर्य से जमाल की तरफ देखा जिस की आँखें सुर्ख़ थीं और उबल कर हलक़ से बाहर आ रही थीं।

"मस्टर जमाल! आप की तबीयत तो ठीक है?" आमिर ने घबराकर कहा।

लेकिन जमाल ने कोई जवाब देने के बजाय ज़ोर से चीख मारी और आगे बढ़कर दोनों हाथों से आमिर का गला पकड़कर दबाने लगा।

आमिर और अमार ने बड़ी मुश्किल से उसे पीछे धकेला। उस वक्त उसका चेहरा बड़ा ही खौफनाक था। चंद लम्हों बाद उसने अमार पर हमला कर दिया। लेकिन अमार की मदद को आमिर मौजूद था। उसने जमाल को ज़ोर से धक्का दिया तो वह कालीन पर गिर पड़ा। अमार ने जल्दी से उसे कालीन में लपेट दिया। वह बेहोश हो गया था। इसके बाद उनकी नज़र जॉन पर पड़ी। उसकी आँखें भी सुर्ख हो रही थीं और वह बड़ी तकलीफ के अंदाज़ में सोफे की पीठ से टेक लगाए हुए पड़ा था। आँखें आहिस्ता-आहिस्ता बंद हो रही थीं। आमिर ने उसे झिंझोड़ते हुए कहा:

"मिस्टर जॉन.....! क्या हुआ? आपकी तबियत एकदम कैसे खराब हो गई?"

आमिर और अमार ने उसकी हथेलियों की मालिश करनी शुरू कर दी। थोड़ी सी कोशिश के बाद उसको होश आ गया। उसने आँखें खोलकर दोनों भाइयों की तरफ देखा और फिर उठकर बैठ गया।

"मुझे क्या हुआ था? ऐसा लगा जैसे किसी ताकतवर हाथ ने मेरे जिस्म से रूह निकाल ली हो। लेकिन फिर खुद ही दोबारा जिस्म में दाखिल कर दी हो। मस्टर आमिर, शायद आप यकीन न करें, यह हाथ उसी मूर्ति का था जो मिस्र रवाना की जा रही है।"

कोई जवाब देने के बजाय दोनों भाई बेहोश जमाल अनवर पर झुक गए और उसके सिर की मालिश शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद आहिस्ता-आहिस्ता जमाल ने आँखें खोल दीं और उनको अपने ऊपर झुके देखा तो नफासत से सवाल किया:

"ये आप लोग क्या कर रहे हैं?"

अमार ने जवाब दिया, "आपकी तबियत खराब हो गई थी। आपने क्या महसूस किया था?"

जमाल ने कमजोर सी आवाज़ में जवाब दिया, "कॉफ़ी का प्याला खत्म करने के बाद मुझे लगा जैसे किसी ने तमाम जिस्म की नसें खींच ली हों। मुझे अपना कलेजा कटा हुआ महसूस हुआ।"

आमिर ने जमाल के कप को गौर से देखा। उसके किनारों पर सफेद सी कोई चीज़ लगी हुई थी। उसने अमार से कहा।

"ये देखो! मेरा ख्याल है, ये सफेद सी चीज़ जो कप के किनारों पर लगी है, जरूर कोई ज़हर है।"

जमाल ने सरगोशी में कहा, "इसका मतलब यह है कि किसी ने मुझे ज़हर देने की कोशिश की है।"

"सिर्फ तुम्हें ही नहीं, मुझे भी," जॉन बोला।

आमिर ने कप को दिखाते हुए कहा, "किनारों पर लगे इस ज़र्द रंग के पाउडर को देखिए।"

जमाल ने ज्यों ही पाउडर को देखा, फौरन बोल पड़ा, "अरे! यह मम्मी पाउडर है - यहाँ कैसे आ गया?"

"मम्मी पाउडर? वह क्या होता है?" आमिर ने सवाल किया।

जमाल ने जवाब दिया, "इस किस्म का पाउडर मिस्र में पुरानी ममी को कीड़ों से महफूज रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। शायद हमारी लाइब्रेरी में भी मौजूद है।"

जॉन ने कप को देखकर अपनी राय का इज़हार करते हुए कहा, "जमाल का ख्याल दुरुस्त है - यह वाकई ममी पाउडर है - इसे मुआयने के लिए लाइब्रेरी में भेजना चाहिए।"

आमिर ने कहा, "मस्टर जमाल, आप भी हमारे साथ चल सकते हैं?"

जमाल ने जवाब दिया, "मेरा सिर चकरा रहा है - कमजोरी बहुत है - मेरे लिए मुमकिन नहीं।"

जमाल को कमरे में छोड़कर आमिर और अमार जॉन के साथ लैबोरेटरी की तरफ रवाना हो गए।

ममी पाउडर

लैबोरेटरी इंचार्ज ने कप में बची हुई थोड़ी सी कॉफी शीशे की ट्यूब में निकाली, इसमें कोई केमिकल शामिल करके गर्म किया और फिर परीक्षण करने के बाद कहा:

"इस कॉफी में ममी पाउडर के अलावा एक नई दवा हेइलोमिन भी शामिल की गई है। इसके संबंध में तमाम स्टाफ को हिदायत कर रखी है कि इससे दूर ही रहें। इसकी ज्यादा मात्रा इंसान को बावले कुत्ते की तरह पागल कर देती है। यह आपके खिलाफ कोई साजिश है जिसकी आपको नियमित रिपोर्ट करनी चाहिए।"

"अब हमें रसोईघर में चलना चाहिए," जॉन ने कहा।

रसोइया एलिस खाना पकाने में व्यस्त थी।

आमिर ने उससे पूछा:

"वह कॉफी कहाँ है जो आप ने जॉन और जमाल को दी थी?"

"खैरियत तो है? यह रही कॉफी," एलिस ने कहा।

आमिर ने कॉफी को गौर से देखकर कहा, "मिस एलिस, क्या आपको मालूम है कि जो कप आपने तैयार किए, उनमें ममी पाउडर और हेइलोमिन शामिल थी?"

यह सुनते ही एलिस पानी की तरह काँप उठी। उसने रोने वाले अंदाज़ में कहा, "ओ मेरे खुदा! मिस्टर जॉन, क्या आप समझते हैं कि मैं आपको ज़हर देकर अपना गला कानून की गिरफ्त में दे दूँगी? आप को मुझ पर विश्वास नहीं है?"

"ऐसी बात नहीं है, एलिस," जॉन ने जवाब दिया। "तुम्हारी वफादारी संदिग्द्ध नहीं है। लेकिन क्या किया जाए, तुम्हारे बनाए हुए कपों में यह ज़हर शामिल था।"

अमार ने सवाल किया, "मिस एलिस, कॉफी बनाने के तुरंत बाद आप दोनों कप लेकर सीधे इस कमरे में आई थीं?"

एलिस ने जवाब दिया, "नहीं। मैंने चार कप बनाए थे - दो इन लोगों के लिए और दो दूसरे डिपार्टमेंट के लिए। मैंने पहले दो कप लेकर वहाँ गई इस लिहाज से कि उनका आर्डर पहला था। वापस आने के बाद यह कप उठाए और आप लोगों को दे दिए।"

जॉन ने आमिर और अमार की तरफ देखकर कहा, "मेरा ख्याल है, पाउडर किसी ने उस वक्त शामिल किया जब एलिस दूसरे डिपार्टमेंट में कॉफी देने गई थी। एलिस, जब तक इस साजिश का पता न चल जाए, तुम्हें अपने होंठ बंद रखने होंगे।"

फिर उसने जल्दी से घड़ी देखते हुए कहा, "अभी मिस्टर सदारत का जहाज जाने में आधा घंटा बाकी है। मुझे फोन पर उनसे बात करनी चाहिए।"

उसने जल्दी से दफ्तर में आकर हवाई अड्डे फोन किया, "मुझे मिस्टर सदारत से बहुत जरूरी बात करनी है। कष्ट करके फोन वी.आई.पी. रूम से मिला दें।"

चंद सेकंड बाद सदारत ने फोन पर जॉन से संपर्क कायम किया तो उसने वर्तमान स्थिति बताते हुए कहा, "सर, इस प्रकार के हालात में जमाल का मिस्र जाना संभव नहीं है। हमें जल्द ही उसे किसी अस्पताल में दाखिल करवाना है। उसके जिस्म में खतरनाक ज़हर मौजूद है।"

दूसरी तरफ से सदारत ने जवाब दिया, "देखो...

जॉन, मेरे बाद अजायब घर तुम दोनों की निगरानी में है। अब जब कि जमाल की हालत खराब है, मैं तुम्हें अजायब घर की निगरानी पर नियुक्त करता हूँ। हो सके तो मूर्ति ले जाने की निगरानी का काम उन दोनों भाइयों के सुपुर्द कर दो। उनके तमाम ।खर्च हम बर्दाश्त करेंगे। मेरा जहाज परवाज़ (उड़ान) के लिए तैयार है। अब तुम खुद ही तमाम ।इंतजाम कर लो। मुझे तुम पर मुकम्मल भरोसा है।"

आखिर इस शर्त पर दोनों भाई मिस्र जाने के लिए राजी हो गए कि उनकी जगह मूर्तियों की चोरी का सुराग लगाने के लिए उनके पिता के खास शागिर्द फरीद कमाल को श्री लंका बुला लिया जाए। चूकि समुद्री जहाज जाने में दो दिन का अर्सा था, इसलिए जॉन ने इस शर्त को मंजूर करते हुए कहा:

"आप का यह काम मैं कर देता हूँ - आप मेरा एक काम कर दें।"

"आप का क्या काम है?" आमिर ने पूछा।

"आज रात आप दोनों उसी जगह मूर्ति की सुरक्षा के लिए ठहर जाएँ। मुझे लकड़ी का संदूक तैयार करवाना है ताकि मूर्ति को उसमें हिफाजत से बंद कर दिया जाए।"

आमिर और अमार ने अजायब घर में रात गुजारने की हामी भरी - जॉन ने दोनों को एक शानदार होटल में खाना खिलाया और फिर उनको मूर्ति वाले तहखाने में छोड़ दिया।

"मस्टर जॉन, कल जब जांच-पड़ताल के लिए फरीद कमाल आ जाएँ तो उन्हें ।अहमद खफाश पर नज़र रखने को कहा जाए। मेरा ख्याल है, अहमद खफाश का इस चोरी से कोई न कोई ताल्लुक ज़रूर है," आमिर ने कहा।

"ओह! मैं आप लोगों को यह बताना तो भूल ही गया कि हम लोगों की व्यस्तता से फायदा उठाकर अहमद खफाश कहीं गायब हो गया है," जॉन ने जल्दी से कहा।

अमार ने कहा "मुझे तो उसी रोज़ ही शक हो गया था जब उसने उस खंजर के बारे में कहा था कि उसकी खूँटी ढीली थी, इसलिए उसने खंजर दीवार से उतार लिया - हालाँ कि खूँटी बिल्कुल ठीक हालत में थी।"

जॉन ने सवाल किया "फिर आप लोगों ने उसे खुला क्यों छोड़ दिया?"

अमार की बजाय आमिर ने जवाब दिया "इसलिए कि उसके ख़िलाफ़ कोई सुबूत न था - दूसरी बात यह थी कि हम उसे ढीला देकर रंगे हाथों पकड़ना चाहते थे।"

"लेकिन अब तो वह कानून की गिरफ्त से इतनी दूर चला गया है कि उसको पकड़ना बहुत मुश्किल है," जॉन बोला।

"कानून और अपराधी का चूहे और बिल्ली वाला हिसाब है। अपराधी कितना ही चालाक क्यों न हो, एक न एक दिन कानून के शिकंजे में फंस ही जाता है," आमिर ने जवाब दिया।

जॉन ने कहा "यह कानून की बातें कानून दान ही जानें। मूर्ति सामने मौजूद है - गौर से देख लें - अब मैं चला - मुझे उम्मीद है, सुबह जब मैं आऊँगा तो यह अपनी जगह मौजूद होगी।"

अमार ने जवाब दिया "आप फ़िक्र न करें - यह मूर्ति है - अपने कदमों से चलकर कहीं नहीं जाएगी - और चोर के कदमों को हम यहाँ तक नहीं आने देंगे।"

जॉन के जाने के बाद अमार और आमिर बिस्तरों पर लेट हो गए। आमिर ने कहा "मेरा ख्याल है, कोई यह नहीं चाहता था कि जमाल मूर्ति के साथ मिस्र जाए - इसीलिए उसे ज़हर दिया गया है।"

"अगर किसी ने जमाल को बर्दाश्त नहीं किया तो हमें कैसे

बर्दाश्त करेगा? कई मन वज़नी सोने की यह मूर्ति किसी भी वक्त चुराई जा सकती है," अमार ने कहा.

आमिर ने सवाल किया "इस मूर्ति के इंतकाम के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"सब फ्रॉड है - चोरों का कोई ग्रुप इसे हासिल करने के लिए आम जनता को यह प्रभाव दे रहा है ताकि जब इसे चुरा लें तो कोई और कहानी गढ़कर कानून को धोखा दे सकें - भला मूर्तियाँ भी कहीं ।बदला लेती हैं," अमार ने कहा.

"इसका मतलब यह है कि हमें रात भर जागकर पहरा देना होगा।"

"यह ड्यूटी आप सर अंजाम दें - बन्दा तो सख्त थका हुआ है - लंबी तान कर सोएगा - हाँ, अगर कोई चोर नज़र आ जाए तो मुझे जगा लेना," अमार ने जवाब दिया और बिस्तर पर लेट गया.

मूर्ति का बदला

तहखाने में पूर्ण खामोशी थी - सिर्फ वाल क्लॉक की टिक-टिक सुनाई दे रही थी - अमार सो चुका था और आमिर ऊँघ रहा था। अचानक क्लॉक ने रात के दो बजाए। अभी आमिर की आँख लगी ही थी कि उसने अपने कंधे पर किसी हाथ का दबाव महसूस किया - वह हलबड़ा कर उठ बैठा। तहखाने मेمपूर्ण अंधेरा था - तमाम बत्तियाँ बंद थीं, सिवाय एक हरे रंग के नाइट बल्ब के.

आमिर ने चौंक कर देखा - उसके सामने सोने की मूर्ति खड़ी क्रोध भरी निगाहों से उसे घूर रही थी - उसके दाहिने हाथ में एक काले रंग का नाग था जिसने अपना फन उठाया हुआ था और वह फुंकार रहा था। आमिर ने अपने होश पर قابू काबू पाते हुए एक नज़र मूर्ति के कमरे की तरफ देखा, लेकिन अंधेरा होने के कारण उसे वहाँ मूर्ति नज़र न आई - उसके कानों में

33

सदारत के वो अल्फाज़ गूंज रहे थे जो उस ने मूर्ति के इंतकाम के बारे में कहे थे , यकीन ना करने वाली बात उसके सामने मौजूद थी ।

अचानक मूर्ति ने कहकहा लगाया और गरज कर आवाज़ में कहा "नादान लड़के ! हम ढाई हज़ार साल पहले भी ज़िंदा थे और आज भी ज़िंदा हैं। तुम ने हमारा मज़ाक उड़ाया था - अब अपनी आँखों से देख लो। इस बार तुम्हें माफ़ किया जाता है - आइंदा ऐसा किया तो तुम हमारे ख़ौफ़नाक इंतकाम से बच नहीं सकोगे।"

ये कह कर मूर्ति ने फुंकारते हुए सांप को अपने गले में डाला और तहखाने की सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर जाने लगी। आमिर जो कुछ देर के लिए सन्न रह गया था, एक दम असली हालत में लौट आया और फिर उस ने मूर्ति की तरफ़ दौड़ लगा दी।

वह भागता हुआ सीढ़ियां चढ़ कर हाल में दाख़िल हुआ जहाँ बहुत सी मूर्तियां /प्रतिमाएं) रखी थीं । उस ने एक दिशा से एक मूर्ति को आते देखा तो उसने एक पत्थर की बड़ी मूर्ति की आड़ ले ली - लेकिन इस से पहले कि मूर्ति उस के क़रीब आए, पत्थर की प्रतिमा/मूर्ति का वज़नी हाथ उस के सर पर पड़ा। उस की आँखों के सामने अंधेरा छा गया और फिर वह बेसुध होकर प्रतिमा के क़दमों में गिर पड़ा।

जब उसे होश आया तो खिड़की से आने वाली चांद की रोशनी हॉल में फैली हुई थी। अचानक उसे महसूस हुआ कि उस के सीने पर कोई भारी चीज़ पड़ी हुई है। उस ने उसे छू कर देखा तो उस के रोंगटे खड़े हो गए और वह थर-थर कांपने लगा। उस के सीने को उसी प्रतिमा ने अपने बाज़ू से दबा रखा था।

चांद की चांदनी में आमिर ने प्रतिमा की तरफ़ निगाह की तो उस के माथे पर पसीना आ गया। प्रतिमा का एक बाज़ू उस से कटा हुआ था और उस जगह से सुर्ख़ सुर्ख़ (लाल) ख़ून बह रहा था। सर्दी की एक लहर ने उस के जिस्म को कपकपा कर रख दिया, प्रतिमा के सीने पर एक तख्ती/पट्टिका लगी हुई थी। आमिर ने उसे गौर से पढ़ा तो मालूम हुआ कि वह उसी रस-देवता की प्रतिमा है।

आमिर ने ख़ुदा का नाम ले कर उस वज़नी बाज़ू को अपने सीने से हटाया और फिर वह खड़ा हो गया। ख़ुदा का नाम लेने और कलमा पढ़ने से उस के जिस्म में ताक़त पैदा हो गई और डर और दहशत का ।असर दूर हो गया । उस ने फ़ौरन उठ कर बिजली का स्विच ऑन कर दिया – सारा हॉल रोशनी से जगमगा उठा।

अब उस पर सारी हक़ीक़त खुल गई थी। उस ने टूटे हुए बाज़ू से बहने वाले ख़ून को देखा। किसी ने बड़ी होशियारी से सुर्ख़ गाढ़ा रंग टूटी हुई जगह लगा दिया था। अब सारी बात उस की समझ में आ गई थी – दरअसल प्रतिमा का यह बाज़ू पहले से टूटा हुआ था।

अजाइब घर की प्रशासन ने उसे मामूली तौर पर किसी चीज़ से अटका दिया था। अंधेरे में वह इस प्रतिमा से टकराया तो बाज़ू धड़ से अलग हो कर उस के सर पर आ पड़ा और वह चोट लगने से बे-होश हो गया था। बात साफ़ ज़ाहिर थी – किसी ने उन के दिलों पर भूतों का ख़ौफ़ डालने के लिए यह हरकत की थी।

वह हॉल की सीढ़ियां चढ़ कर जल्दी से तहखाने में दाख़िल हुआ। यहां रोशनी फैली हुई थी। उस ने अम्मार को बिस्तर पर बैठे देखा, जिस के हाथ में मूर्ति वाला काला नाग था और वह ज़ोर-ज़ोर से फुंकार रहा था। आमिर ने चीख कर कहा:

"पागल हो गए हो? इस मौत को दूर फेंक दो - ये सांप बहुत ज़हरीला होता है!"

अम्मार ने हंसते हुए कहा "भाई, ज़रा क़रीब आ कर तो देखो!"

आमिर ने दोबारा चीख कर कहा "मैं कहता हूँ इस सांप को दूर फेंक दो - काट खाएगा। देखो, कैसे फुंकार रहा है!"

अम्मार ने क़हक़हा लगाते हुए कहा "अरे मेरे भाई, ये तो रबड़ का सांप है!"

"नंगली सांप है? मगर ये तो फुंकार रहा है!"

"क़रीब आ कर इस का मुआयना करो - सब कुछ पता चल जाएगा। ये देखो। सांप अंदर से ख़ाली है और इस के पेट के नीचे बच्चों के खिलौनों वाली सीटी लगी हुई है। जब इस को दबाया जाता है तो हवा इस सीटी से निकलती है, जिस की आवाज़ सांप की फुंकार की तरह है। तुम ने प्लास्टिक की गुड़ियों में ऐसी सीटी नहीं देखी जिन्हें दबाने से वो बोलती हैं?"

आमिर ने क़रीब जा कर सांप का मुआयना किया तो खेल खुला कर हंस पड़ा। इस के बाद उस ने

कमरे में झांक कर देखा - बुद्ध की मूर्ति अपनी जगह मौजूद थी।

"मेरा ख़्याल है, यह छोटी-मोटी चोरी का केस नहीं। अपराधियों ने यहां अच्छा ख़ासा साज़िश का जाल बिछा रखा है," आमिर ने कहा।

अम्मार ने सोचते हुए कहा "तुम्हारा ख़्याल दुरुस्त है - शायद इसी लिए हमें इस मूर्ति के इंतकाम की कहानी सुना कर डराने की कोशिश की गई है।"

"फ़िलहाल तुम इस का ज़िक्र किसी से न करना - मेरा ख़्याल है अपराधी हमें मिस्र जाने से रोकना चाहते हैं।"

इस के बाद दोनों भाइयों ने दरवाज़ों और खिड़कियों का मुआयना किया और फिर अपने अपने बिस्तरों पर लेट हो कर सो गए।

सुबह को मिस एलिस उन के लिए नाश्ता ले कर आई तो बाहर धूप फैली हुई थी। उस ने कपों में चाय डाल कर आमिर और अम्मर को दी तो उन्होंने कपों के किनारों को गौर से देखा -

एलिस ने खिसियानी हंसी हंस कर कहा: "फ़िकर न करें - इस बार मैंने किसी को इतना मौक़ा नहीं दिया कि वह चाय में ज़हर शामिल कर सके - मिस्टर आमिर, अपराधियों के पास और भी कई अंधेरे े हो सकते हैं। यह ज़रूरी तो नहीं कि वो हर किसी को ज़हर दे कर ही हलाक करने की कोशिश करें।"

"क्यों, आप का ख़्याल दुरुस्त है - आप सूरत से तो बहुत मासूम नज़र आती हैं मगर हक़ीक़त में बहुत ही चालाक हैं।"

एलिस ने अंडों की प्लेट आगे बढ़ाते हुए कहा "ये सब जासूसी नावलों की बदौलत है - मैं जासूसी नावल बहुत शौक से पढ़ती हूँ।"

अम्मार ने क़हक़हा लगाते हुए कहा "। इसी लिए यहां बड़े आराम से चोरियां हो रही हैं।"

एलिस ने नागवारी से कहा "मैं आप का मतलब नहीं समझी।"

"अम्मार का मतलब ये है कि इतने बहुत से जासूसों की मौजूदगी में भी यहां चोरियां हो रही हैं," आमिर ने मुसकरा कर कहा।

एलिस ने किसी क़दर रूखे अंदाज़ में कहा "मिस्टर आमिर, चोरी करने वाले तो आँखों से काजल चुरा लेते हैं - ये तो सोने की मूर्तियां हैं - हां, याद् आया - मिस्टर जॉन दफ़्तर में आप लोगों का इंतज़ार कर रहे हैं - शायद मिस्टर फरीद कमाल यहां आ चुके हैं और आप लोगों से मिलने के तैयार हैं।"

दोनों भाइयों ने जल्दी जल्दी नाश्ता किया और फिर दफ़्तर की तरफ़ रवाना हो गए।

जब वो दफ़्तर में दाख़िल हुए तो जॉन चोरी के तमाम वाक़यात फ़रीद कमाल को बता चुका था - फ़रीद कमाल ने बड़ी मुहब्बत और गर्म-जोशी के साथ दोनों का इस्तकबाल किया और कहा: "मुझे तमाम हालात कि जानकारी मिस्टर जॉन से हो चुकी है - तुम दोनों बे फ़िकर हो कर मिस्र जाओ - मैं चोरों से मूर्तियां बरामद/वापस कर लूँगा - आखिर मैं दुनिया के मशहूर जासूस शहाब जैदी का शागिर्द हूँ।"

उसी वक़्त टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी - जॉन ने रिसीवर उठाया और फिर आमिर की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा "तुम्हारे डैडी की काल है।"

आमिर ने अपने डैडी को यहां के तमाम हालात बताए और उन से मिस्र जाने की इजाज़त चाही। शहाब जैदी को जब ये मालूम हुआ कि उन का नाएब फ़रीद कमाल कोलंबो पहुंच गया है तो उन्होंने लड़कों को मिस्र जाने की इजाज़त दे दी - फिर फ़रीद कमाल को कुछ निर्देश देने के बाद सिलसिले को समाप्त कर दिया गया।

रहस्यमयी साया

जॉन मूर्ति के बक्से के साथ आमिर और अम्मार को बंदरगाह ले गया, जहाँ एक समुद्री जहाज लंगर डाले खड़ा था। यह जहाज मिस्र के लिए रवाना होने वाला था, इसलिए रास्ते के शहरों का सामान भी इस पर लादा जा रहा था। एक बहुत बड़ी क्रेन सामान उठाकर जहाज पर लादने में व्यस्त थी। इसी सामान के साथ मूर्ति वाला बक्सा भी जहाज पर पहुँचा दिया गया।

जहाज ने प्रस्थान से पहले सीटी बजाई, तो आमिर और अम्मार ने जॉन और फरीद कमाल से हाथ मिलाया और जहाज पर सवार हो गए। कप्तान हमीद राशदी ने बहुत स्नेह के साथ उनका स्वागत करते हुए कहा:

"मैंने मूर्ति के बक्से के पास ही आप दोनों के लिए एक केबिन का इंतज़ाम कर दिया है, ताकि आप इस बक्से को हर समय अपनी नज़र में रख सकें।"

आमिर और अम्मार ने जहाज के कप्तान का शुक्रिया अदा किया और फिर अपने केबिन की ओर रवाना हो गए। इसके बाद जहाज गहरे पानी की तरफ रवाना हो गया और हिंद महासागर की लहरों की गोद में झूलता हुआ आगे बढ़ने लगा। आमिर और अम्मार अपने केबिन में सामान व्यवस्थित कर रहे थे, जिसकी खिड़की से सामने रखा हुआ मूर्ति का बक्सा उन्हें दिखाई दे रहा था। उसी समय जहाज का कप्तान अंदर आया और कुर्सी पर बैठ गया। आमिर ने पूछा:

"हमीद राशदी साहब, इस लंबे सफर में जहाज कहाँ-कहाँ रुकेगा?"

हमीद ने उत्तर दिया, "हमारा पहला ठहराव तब होगा जब जहाज लाल सागर में प्रवेश करेगा और हम अदन पहुँच चुके होंगे।"

अभी कप्तान दूसरे ठहराव के बारे में बताना ही चाहता था कि चालक दल (क्रू) के एक सदस्य ने उसे वायरलेस पर किसी संदेश के बारे में बताया, और वह क्षमा मांगता हुआ चला गया।

जहाज दिनभर सफर करता रहा—अब चारों तरफ केवल पानी ही पानी दिखाई दे रहा था। आखिरकार सूरज धीरे-धीरे अस्त हो गया। सुनहरे रंग से रंगी लहरों पर धीरे-धीरे स्याही छाने लगी और फिर अंधेरा घिर आया। इस दौरान आमिर और अम्मार मूर्ति वाले संदूक की निगरानी करते रहे।

रात होते ही जहाज में रोशनी कर दी गई, लेकिन यह रोशनी ज्यादातर यात्रियों के केबिनों की तरफ थी। सामान की तरफ रोशनी का कोई विशेष प्रबंध नहीं था—सिर्फ दूर से आ रही रोशनी का प्रतिबिंब कहीं-कहीं पड़ रहा था।

आमिर ने अम्मार से कहा, "अब हमें बारी-बारी से जागकर मूर्ति की सुरक्षा करनी होगी।"

अम्मार ने लापरवाही से उत्तर दिया, "ऐसी भी कोई बात नहीं है—मनों वजनी इस संदूक को कोई खिलौने की तरह उठाकर जेब में नहीं रख लेगा। इसके चारों ओर बंधी हुई तारपलीन की चादरों को उखाड़ने के लिए भी काफी समय चाहिए होगा, और कीलों से जड़ी हुई इन चादरों को बिना आवाज़ किए उखाड़ लेना इतना आसान नहीं है। इसलिए मेरा सुझाव है कि आराम से सो जाओ। हाँ, अलबत्ता आँखों के बजाय अपने कान खुले रखो!"

अम्मार ने बिस्तर पर लेटकर आँखें बंद कर लीं—

लेकिन आमिर जानता था कि उसका भाई इतना गैर-ज़िम्मेदार नहीं है, वह महज़ उसे तंग करने की ग़रज़ से ऐसा कर रहा है। वह भी उतना ही चौकस था जितना आमिर।

रात तेज़ी से गुज़रती जा रही थी। आसमान पर सितारों के काफिले दिख रहे थे , अलबत्ता चांद का नाम-ओ-निशान न था। आमिर ने ऊंघते-ऊंघते जम्हाई ली और फिर आख़िरी मर्तबा मूर्ति वाले संदूक की तरफ़ देखा। फिर वह बिस्तर से इस तरह उठा जैसे किसी बिच्छू ने डंक मार दिया हो। उस की निगाहें मूर्ति के संदूक पर लगी हुई थीं कि उस के कान में किसी ने सरगोशी की:

"ज़मीन व आसमान दोनों अपनी जगह मौजूद हैं, फिर आप ने अपनी जगह क्यों छोड़ दी है?"

आमिर ने मुड़कर देखा—अम्मार उस की कमर से सट कर खड़ा था और उस की नज़रें भी मूर्ति वाले संदूक पर लगी हुई थीं।

अम्मार ने सरगोशी में कहा, "मैं ने इस सामान के दरमियान मूर्ति वाले संदूक की तरफ़ किसी साए को बढ़ते हुए देखा है।"

अम्मार ने शरारत से जवाब दिया, "फ़िक्र की कोई बात नहीं—मूर्ति के संदूक से निकल कर चहल-कदमी कर रही होगी।"

कोई जवाब देने के बजाए आमिर चीते की सी फूर्ती से केबिन से बाहर निकल गया। भला अम्मार कब पीछे रहने वाला था, वह भी भाई के पीछे बाहर निकल गया। ज्यों ही वह आमिर के क़रीब पहुंचा, आमिर ने एक त्यरफ इशारा किया जहाँ कोई साया जहाज़ के कर्मचारियों की वर्दी पहने मूर्ति के संदूक की तरफ़ बढ़ रहा था।

वे दोनों भी सामान के दरमियान रास्ता तलाश करते हुए उसी तरफ बढ़ने लगे। साए के हाथ में लोहे के चंद औज़ार दिखाई दे रहे थे और वह मूर्ति के संदूक की तरफ़ बढ़ रहा था। आमिर और अम्मार ने संदूकों की आड़ ले रखी थी। फिर ज्यों ही वह साया संदूक के पास पहुंचा, दोनों भाई उसे पकड़ने के लिए तैयार हो गए। लेकिन उसी वक़्त समुद्र की एक बड़ी लहर ने जहाज़ को उछाल दिया—आमिर और अम्मार संतुलन न रख सके और सामान के ऊपर जा गिरे। आवाज़ पैदा होते ही साए ने एक तरफ़ जंप लगाई। वे दोनों को देख चुका था, दोनों भाई उस की तरफ भागे और उन के दरमियान आँख-मिचौली होती रही। साया अपने आप को अँधेरे में रख कर फ़रार होने का रास्ता तलाश कर रहा था, जो उसे जल्दी ही मिल गया और जब आमिर और अम्मार उस पर झपटे तो उसे अंधेरा निगल चुका था।

आख़िर अम्मार ने राय देते हुए कहा, "भाई, तुम दाईं तरफ़ से चक्कर काट कर मूर्ति के बक्स तक पहुंचो, मैं बाईं तरफ़ से आता हूँ—इस तरह हम ज़रूर पकड़ने में कामयाब हो जाएंगे।"

दोनों अपनी-अपनी तरफ में सामान के दरमियान चले जा रहे थे। आख़िर अम्मार ने उस साए को देख लिया जो सामान की आड़ लेता हुआ उस की तरफ चला आ रहा था। अम्मार तैयार हो कर एक जगह आड़ में खड़ा हो गया और ज्यों ही साया उस के क़रीब पहुंचा, उस ने छलांग लगा कर उसे दबोच लिया। दोनों एक-दूसरे की पकड़ से छूटने की कोशिश में लड़खड़ाते हुए दूर चले गए। फिर ज्यों ही अम्मार ने साए की कनपटी पर मुक्का मारने के लिए हाथ उठाया, वह हैरान रह गया—चोर की बजाए दोनों भाई आपस में गुत्थम-गुत्था हो रहे थे। दोनों ने परेशानी से एक-दूसरे की तरफ़ देखा और फिर खिसियानी हंसी हंस कर दोबारा चोर की तलाश शुरू कर दी, लेकिन अब चोर उन की पकड़ से दूर हो चुका था।

जब वे अपने केबिन की तरफ़ आ रहे थे तो उन्होंने किसी के क़दमों की आवाज़ सुनी। वे उस तरफ़ बढ़े ही थे कि एक साया एक बक्से को फांदता हुआ अंधेरे में ग़ायब हो गया। दोनों भाई तेज़ी से उस के पीछे चल दिए और जब उन्होंने बक्से के दूसरी तरफ़ देखा तो वहां रोशनी में जहाज़ का कोई बढ़ई हथौड़े से एक टूटे हुए बक्से की मरम्मत कर रहा था।

आमिर ने उस से पूछा "तुम कौन हो?"

"नज़र नहीं आता? मैं जहाज़ का कारपेंटर हेशाम हूँ," उस ने रूखाई से जवाब दिया।

"लेकिन तुम हमें देख कर भागे क्यों थे, और उस मूर्ति के बक्स के पास क्या लेने गए थे?" आमिर ने सख्ती से कहा।

"अपना लहजा दुरुस्त करो, मस्टर," हेशाम ग़ुस्से से बोला "मैं बाक्सर रह चुका हूँ और मेरा हाथ काफ़ी भारी है। तुम्हें इस क़िस्म के सवालात करने का मुझ से कोई हक़ नहीं - जाओ अपना रास्ता लो।"

आमिर को ग़ुस्सा तो बहुत आया लेकिन वह पी गया।

अम्मार ने बड़ी नरमी से उस से पूछा "अच्छा भाई, बाक्सर - इतना ही बता दो कि कोई आदमी इस बक्स को फांदता हुआ क़रीब से गुज़र कर तो नहीं गया?"

"यहां हर आदमी आराम कर रहा है - तुम्हारी तरह बे-आरामी का शिकार नहीं - सुबह को शिप के डॉक्टर से मुआयना करवाना।"

दोनों भाई वापस हो लिए - रास्ते में आमिर ने कहा "या तो वह साया इसी आदमी का था या फिर यह उस के मुत्ताल्क़ ज़रूर कुछ न कुछ जानता है - लेकिन बताना नहीं चाहता।"

अम्मार ने जवाब दिया "तुम्हारा ख़्याल दुरुस्त है - लेकिन अब बेहतर यह है कि चल कर मूर्ति के संदूक का मुआयना कर लें - वो तो ठीक-ठाक है या नहीं।"

दोनों ने आ कर मूर्ति वाले बक्स का मुआयना किया जो ठीक हालत में था - ।तसल्ली करने के बाद वे अपने केबिन की तरफ़ आए तो ठिठक कर खड़े हो गए। उन के सामने डरावनी शक्लों वाली दो बलाएं खड़ी थीं।

"तुम कौन हो और हमारे केबिन में क्या कर रहे हो?" आमिर ने कड़ा कर के पूछा।

"हम खाशूश और खरथोश इस मूर्ति के ख़िदमतगार हैं, और इस की हिफ़ाज़त कर रहे हैं - ढाई हज़ार साल पहले भी हम महात्मा बुद्ध के ग़लाम थे - हमें आक़ा का हुक्म है कि हम तुम्हारा दिल निकाल कर कच्चा ही चबा जाएं।"

"भाइयो, हमारा दिल कच्चा मत खाना - हज़्म न होगा - अलबत्ता भून लो तो अच्छी बात है," अम्मार ने हंस कर कहा।

इस के साथ ही उस ने आंख से भाई को इशारा किया और फिर दोनों एक साथ साए पर झपट पड़े। उन्होंने बलाओं के मुंह नोच लिए और अब हैरान से उन रबड़ के बने हुए चेहरों को देख रहे थे जो उन के हाथों में थे - उन के सामने उन के दोस्त नसीर और इरफ़ान खड़े मुसकरा रहे थे।

आमिर ने इन्हें देख कर ख़ुशी होते हुए कहा "अरे! तुम और इस जहाज़ पर! माजरा क्या है, दोस्तों?"

नसीर ने जवाब दिया "भाई, हम तो दोस्तों के साथ जहाज़ पर क्या जहन्नम तक जाने को तैयार हैं।"

इरफ़ान ने कहा "हैरान होने की बात नहीं - दरअसल इस जहाज़ के कप्तान हमीद राशदी मेरे अंकल हैं - हमें जब इल्म हुआ कि तुम किसी मूर्ति के साथ मिस्र जा रहे हो तो

हम ने भी इस सफ़र में तुम्हारा साथ देने का इरादा कर लिया - इत्तिफ़ाक़ से जहाज़ का वायरलेस ऑपरेटर छुट्टी पर गया हुआ था, इसलिए अंकल ने मुझे आरज़ी तौर पर इस ड्यूटी पर रख लिया।"

"रह गया मैं ग़रीब, तो मुझे कप्तान साहब के बेयरे की जगह दे दी गई जिसे मैं ने खुशी से स्वीकार कर लिया ," नसीर बोला।

आमिर ने कहा "नसीर, तुम सदा के पेटू हो - तुम्हारे लिए ये नौकरी ही ठीक है ।"

"कहीं कप्तान साहब को न बता देना - वो मेरी छुट्टी कर देंगे," नसीर बोला।

अम्मार ने कहा "तुम्हारी छुट्टी हो न हो, बच्चों, बाकी स्टाफ की ज़रूर छुट्टी हो जाएगी - सारा राशन तो तुम खा जाओगे और वो ग़रीब भूखों मर जाएंगे।"

इस के बाद नसीर और इरफ़ान टहलने के लिए चले गए और आमिर और अम्मार बिस्तर पर लेट गए

- रात का पिछला पहर था - सितारों की बारात आसमान से रुखसत हो रही थी - आमिर ऊंघ रहा था कि उस ने क़हक़हे की आवाज़ सुन कर आँखें खोल दीं और फिर उस की आँखें फटी की फटी रह गईं - इस बार खिड़की के बाहर बुद्ध की मूर्ति खड़ी थी - वो क़हक़हे लगा रही थी और आमिर और अम्मार हेरत से उसे देख रहे थे - फिर ज्यों ही दोनों भाई केबिन से बाहर निकले, मूर्ति ग़ायब हो गई।

दोनों भाइयों ने तमाम जहाज़ में घूम-घूम कर उसे तलाश करना शुरू किया - जहाज़ में खामोशी थी , जहाज़ का अमला भी सो चुका था - आख़िर तलाश करते हुए वो जहाज़ के धुरचे (उपरले हिस्से/डेक) पर चले आए - उन्होंने ऊपर से झांक कर देखा तो नीचे की मंजिल में कोई शख़्स हिफ़ाज़ती कश्ती के रस्से को रेलिंग के साथ बांध रहा था - उस ने जहाज़ के अमले वाली वर्दी पहन रखी थी।

आमिर ने अम्मार से कहा "हमें चल कर देखना चाहिए - रात के इस पहर जब कि मुसाफिरों के अलावा अमला भी सो रहा है, ये शख़्स क्या कर रहा है।"

दोनों जल्दी-जल्दी अर्श (डेक) से उतर कर नीचे की मंजिल में आ गए जहाँ वही शख़्स रेलिंग के साथ रस्से को बांध रहा था -

आमिर और अम्मार उस के क़रीब गए और फिर हैरानी से एक-दूसरे की तरफ़ देखा - ये शख़्स हेशाम था।

"मेरा ख़्याल है, ये रात सैर करने के लिए बिल्कुल बढ़िया है," आमिर बोला।

"होगी - जाओ, सैर करो," हेशाम ने जवाब दिया।

अम्मार ने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा "ये तुम इस रस्ते से क्या जहाज़ को कंट्रोल कर रहे हो?"

हेशाम ने क्रोधित नज़रों से उसे देखा और फिर बोला "मैं यहां ड्यूटी पर हूँ - तुम्हारा ख़्याल है, मैं भी किसी उल्लू की नस्ल से हूँ जो आधी रात को सैर करता फिर रहा हूँ?"

इस जवाब पर अम्मार के कान सुर्ख़ हो गए - लेकिन आमिर ने उसे इशारे से दिमाग़ ठंडा रखने के लिए कहा।

"जाओ, जा कर सैर करो - मेरी टोह में रहने से तुम्हें कोई फ़ायदा न होगा - अलबत्ता नुक़सान ज़रूर हो सकता है," ये कह कर हेशाम चला गया।

अम्मार ने कहा "ऐसा लगता है ये शख़्स हमारे साथ कोई खेल खेल रहा है - ये दूसरी मर्तबा है कि हम ने इसे अकेले देखा है।"

आमिर ने जवाब दिया, "मुमकिन है यह शख्स हमारा पीछा अजायब घर से ही कर रहा हो—ऐसा लगता है यह हमें डरा कर मिस्र जाने से रोक रहा है—हमें अब ज़्यादा होशियार रहना चाहिए।"

[खौफ़नाक तूफ़ान]

आमिर और अम्मार की आँख खुली तो सूरज पूरी रोशनी के साथ चमक रहा था। दोनों जल्दी-जल्दी तैयार हो कर बाहर निकल आए। इनका रुख कप्तान के केबिन की तरफ़ था। आमिर ने कप्तान को रात के वाक़ए के बारे में बताया और फिर सवाल किया, "आप के स्टाफ़ में ज़रूर कोई ऐसा आदमी है जो यह शैतानी हरकतें कर रहा है।"

कप्तान ने हैरत से जवाब दिया, "मेरा ख़्याल है यह तुम्हारा वहम है—भला मेरे स्टाफ़ को तुम्हारे इस केस से क्या दिलचस्पी हो सकती है?"

अम्मार ने दूसरा सवाल दागते हुए कहा, "आप के स्टाफ़ में सब पुराने आदमी हैं या कुछ नए भर्ती किए गए हैं?"

कप्तान ने जवाब दिया, "सब ही पुराने आदमी हैं—कुछ नए आदमियों का भी इज़ाफ़ा हुआ है।"

अम्मार ने दूसरा सवाल किया, "इस हेशाम के मुत्ताल्क़ आपका क्या ख़्याल है? यह पुराने मुलाज़मों में से है या नए आदमियों में से है?"

"नहीं—उसे नया भर्ती किया गया है—क्या तुम्हें उस पर किसी क़िस्म का शक है?" कप्तान ने पूछा।

"हमारी नज़र में वह संदिग्ध है," आमिर ने कहा।

"अच्छा हुआ तुमने मुझे बता दिया—अब मैं इसकी निगरानी करूंगा," कप्तान बोला।

वे दोनों कप्तान का शुक्रिया अदा करके बाहर निकले तो नसीर और इरफ़ान को प्रतीक्षा करते हुए पाया। नसीर ने इन्हें एक तरफ़ ले जा कर कहा:

"तुम दोनों के लिए एक ख़ास ख़बर मेरे पास है—मेरे पीछे ख़ामोशी से चले आओ।"

फिर एक जगह रुक कर वह कहने लगा, "मैं तुम्हें वह हैरान करने वाली चीज़ दिखाना चाहता हूँ जिसे मैंने इस लाइफ बोट यानी रक्षक नाव में पड़ा पाया है।"

वह रस्से की मदद से नाव में उतर गया और जब वह वापस आया तो उसके हाथ में सुनहरी रंग के प्लास्टिक का एक लिबास था। उसने जल्दी से आड़ में जा कर यह सुनहरी पोशाक पहन ली और बाहर आया और उस पर आमिर और अम्मार की नज़र पड़ी तो दोनों मुँह से एक साथ निकला "महात्मा बुद्ध की मूर्ति!"

नसीर ने जवाब दिया, "मेरा ख़्याल है, यही पहन कर कोई परेशान करता रहा है"

नसीर ने दोबारा आड़ में जा कर मूर्ति वाला लिबास उतार कर अम्मार और आमिर की तरफ़ बढ़ाया। आमिर ने उसे उलट-पलट कर देखा तो उस में एक चिट लगी हुई थी, जिस पर "लक्सर" छपा हुआ था। आमिर ने सरगोशी के अन्दाज़ में कहा:

"लक्सर तो मिस्र का एक शहर है, जो काहिरा से 400 मील दूर नील नदी के किनारे आबाद है—मेरा ख़्याल है यह यह पोशाक उसी शहर से खरीदी गई है।"

"या बनवाई गई है," अम्मार ने बीच में बात जोड़ी।

नसीर और इरफ़ान ने बलाओं/भूतों के जो मास्क चहरों पर "लगाकर हमें डराने की कोशिश की थी, मैंने उन पर भी ऐसी ही चिट लगी देखी थी," आमिर ने अम्मार को बताया।

इरफ़ान ने कहा, "आमिर का विचार सही है। लक्सर में ऐसे मुखौटे दुकानों पर सामान्य रूप से बिकते हैं।"

"वह तो ठीक है, किंतु इस पोशाक के भीतर वह कौन व्यक्ति है जो हमें मिस्र जाने से रोकने के प्रयास में व्यस्त है?" अम्मार ने कहा।

"एक उपाय समझ में आया है। क्यों न हम उसके चारों ओर जाल फैलाएँ? हम इस पोशाक को उस नाव में रख देते हैं और फिर अलग-अलग स्थानों पर छिपकर नाव पर नज़र रखते हैं। मेरा विचार है कि अपराधी पोशाक लेने अवश्य आएगा," आमिर ने अपना विचार प्रकट किया।

अम्मार ने प्रसन्न होकर कहा, "यह एक उत्तम उपाय है। बस, इस पर कार्य आरंभ कर दिया जाए। हम चारों उस नाव पर नज़र रखेंगे।"

पूरा दिन और पूरी रात बीत जाने के बाद जब चारों मित्र कमरे में एकत्रित हुए तो बहुत निराश थे, क्योंकि इस दौरान किसी ने भी उस नाव की ओर ध्यान नहीं दिया था और न ही कोई उस पोशाक को लेने आया था।

कई दिन बीत गए। कोई भी दुर्घटना नहीं हुई। आमिर और अम्मार दिन-रात मूर्ति के संदूक की निगरानी करते रहे। उन्होंने हेशाम पर भी नज़र रखी, किंतु उनमें भी कोई बात संदिग्ध नज़र नहीं आई। वह भी अन्य कर्मचारियों की तरह अपना कर्तव्य निभाता रहा, परंतु ठीक उस समय जब जहाज़ लाल सागर में प्रवेश कर रहा था, कप्तान हमीद राशदी ने लाउडस्पीकर पर यात्रियों को संबोधित किया:

"मैं हमीद राशदी, जहाज़ का कप्तान होने के नाते, सभी यात्रियों को सूचित करता हूँ कि मौसम विभाग की सूचना के अनुसार समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आ रहा है। इसलिए सभी यात्रियों को इस तूफ़ान का सामना करने के लिए स्वयं को तैयार कर लेना चाहिए। सहयोग के लिए धन्यवाद।"

देखते ही देखते समुद्र की लहरों में तेज़ी आ गई, जिससे जहाज़ हिचकोले खाने लगा। आकाश पर काली घटा छा गई और मूसलाधार वर्षा आरंभ हो गई। और फिर तूफ़ान ने पूरी शक्ति के साथ जहाज़ को खिलौने की तरह उछालना शुरू कर दिया। समुद्र की लहरें साँपों की तरह फनकारती हुई जहाज़ से टकरा रही थीं और समुद्र का पानी जहाज़ में आ रहा था।

तेज़ हवा आँधी में बदल गई और जहाज़ कटी पतंग की भाँति हिचकोले खाने लगा। हर समय यह डर बना रहता था कि कहीं वह पलट न जाए। सारा सामान इधर-उधर लुढ़क रहा था। झटकों से कई रस्से, जिनसे सामान बाँधा गया था, टूट गए थे। जहाज़ का दल पानी निकालने में व्यस्त था, जबकि यात्रियों की चीख-पुकार के कारण कान-पड़ी आवाज़ भी सुनाई नहीं देती थी।

जहाज़ का कप्तान समय-समय पर यात्रियों को शांत रहने के निर्देश प्रसारित कर रहा था और उन्हें प्रार्थना करने के लिए कह रहा था, क्योंकि बिजली की कड़क और बादलों की गर्जना से हृदय दहक रहे थे। समुद्र की भड़की हुई लहरें जहाज़ को खिलौने की तरह उछाल रही थीं। जहाज़ की पूरी व्यवस्था अस्त-व्यस्त होकर रह गई थी।

आमिर और अम्मार को मूर्ति वाले बक्से की चिंता थी, क्योंकि जहाज़ के झटकों से सामान एक-दूसरे से टकरा रहा था और लड़खड़ा रहा था। मूर्ति के संदूक के चारों ओर बंधा हुआ रस्सा धीरे-धीरे टूट रहा था, किंतु अभी तक संदूक को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँची थी। दोनों भाई अपने कमरे से संदूक पर नज़र रखे हुए थे।

तूफ़ान की तीव्रता में कोई कमी नहीं आई थी। काले आकाश पर बिजलियों का जाल बुन रहा था और वह गरज रहा था। वर्षा की तीव्रता भी बनी हुई थी।

अचानक आँधी का एक तेज़ झोंका जहाज़ से टकराया और जहाज़ सूखे तिनके की तरह हिचकोले खाने लगा। मूर्ति के संदूक की रस्सी टूट गई और संदूक ज़मीन पर लुढ़कता हुआ रेलिंग की तरफ़ जाने लगा। इस स्थिति को देखकर आमिर ने केबिन का दरवाज़ा खोला और संदूक की तरफ़ भागा, और उस संदूक को—जिसे उफनती हुई लहरें अपने साथ समुद्र में ले जाना चाहती थीं—बचाते हुए, लहरों के थपेड़ों के साथ स्वयं रेलिंग से टकराकर समुद्र में जा गिरा।

दल के आदमियों ने एक मज़बूत रस्सी को संदूक के चारों ओर लपेटकर उसे तो बचा लिया, किंतु आमिर समुद्र की उफनती हुई लहरों की भेंट चढ़ गया। भाई को समुद्र में गिरते देखकर अम्मार केबिन से बाहर आ गया और रेलिंग से झुककर देखा। उसी समय आमिर का सिर लहरों के भीतर से पानी की सतह पर उभरा।

अम्मार ने भाई की तरफ़ रस्सा फेंका और कहा, "आमिर! इस रस्ते को पकड़ने का प्रयास करो। एक समुद्र तो क्या, सातों समुद्र मिलकर भी तुम्हें मेरे मुँह से नहीं छीन सकते।"

रस्सा आमिर से कुछ ही फीट की दूरी पर, लहरों के साथ साँप की तरह लहरा रहा था। किंतु तूफ़ानी लहरें आमिर को रस्सा पकड़ने की मोहलत देने को तैयार नहीं थीं। अड़ियल लहरों का मुकाबला करते-करते आमिर की भुजाएँ सुन्न हो रही थीं और धीरे-धीरे उसकी शक्ति समाप्त होती जा रही थी। आँधी के झोंकों और तूफ़ान के वेग ने आमिर और रस्से के बीच की दूरी को और बढ़ा दिया था।

नज़ीर और इरफ़ान ने अम्मार को मज़बूती से थाम रखा था, जो अपने भाई की सहायता करने के लिए स्वयं समुद्र में कूदकर अपनी जान गँवाना चाहता था।

अचानक आकाश में तेज़ बिजली चमकी। एक बार फिर लहरों के बीच से आमिर का सिर सतह पर आया। उसने दोबारा प्रयास करके रस्से को पकड़ना चाहा, किंतु उसकी यह कोशिश भी लहरों के थपेड़ों ने असफल बना दी। तूफ़ानी लहरें एक बार फिर उसे दूर ले गईं।

जहाज़ को एक जोरदार झटका लगा और रेलिंग के पास खड़े कई व्यक्ति फर्श पर गिर पड़े। एक बार फिर बिखरा हुआ सामान इधर-उधर लुढ़कने लगा। किंतु इस बार वहाँ मूर्ति वाला संदूक नहीं था, जिसे नज़ीर और इरफ़ान ने पहले ही मज़बूत रस्सियों से जकड़ दिया था।

अम्मार—जो साथियों की पकड़ से आज़ाद हो चुका था—एक बार फिर अपने भाई को बचाने के लिए समुद्र में कूदने का प्रयास करने लगा, किंतु इरफ़ान ने उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया।

सभी लोग ठंड से काँप रहे थे, किंतु सबकी नज़रों का केंद्र केवल आमिर था। एक बार फिर लहरों ने उसे सतह की तरफ़ उछाल दिया था। अब उसमें इस भयंकर तूफ़ान से मुकाबला करने की शक्ति शेष नहीं रही थी। उसका अंग-अंग टूट रहा था—तूफ़ान ने उसे रुई की तरह धुन कर रख दिया था। उसकी भुजाएँ सुन्न हो चुकी थीं, किंतु शायद उसका जीवन अभी शेष था।

ठीक उसी समय जब वह पानी की सतह पर उभरा, हवा के एक झोंके ने तैरते हुए रस्से को लाकर उसके ऊपर फेंक दिया, और फिर लहरों ने उस रस्से को उसके शरीर के चारों ओर लपेटना आरंभ कर दिया।

इस दृश्य को देखकर अम्मार, इरफ़ान और नज़ीर की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। अम्मार ने चिल्लाकर कहा, "आमिर! ईश्वर के लिए अपने होश मत खोने देना।"

"रस्से को मज़बूत से थामे रखो!" भाई की आवाज़ ने आमिर के मुर्दा जिस्म में ऊर्जा उत्पन्न कर दी। उसने मृत्यु के विरुद्ध संघर्ष करते हुए अपने हाथों की बाहों के साथ रस्सी को अच्छी तरह लपेट लिया और अम्मार तथा नज़ीर ने अन्य साथियों की सहायता से उसे ऊपर खींचना आरंभ कर दिया। यह सब लोग उसे तूफ़ानी हवाओं और खूँखार लहरों के चंगुल से छीनकर जहाज़ की दिशा में ला रहे थे। अंततः एक लंबे संघर्ष के पश्चात वे आमिर को पुनः जहाज़ पर लाने में सफल हो गए।

आमिर का शरीर बर्फ की तरह ठंडा था और वह خزاں رسیدہ (पतझड़ के मारे) पत्तों की भाँति काँप रहा था। अम्मार ने शीघ्रता से भाई को अपने कंधे पर उठाया, केबिन में लाकर उसके भीगे हुए वस्त्र बदले और फिर उसे बिस्तर पर लिटाकर कंबलों से अच्छी तरह ढाँक दिया। उसी समय कप्तान, डॉक्टर के साथ केबिन में प्रवेश हुआ और डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाकर आमिर के शरीर को ऊष्मा (गर्मी) पहुँचाई।

अब धीरे-धीरे समुद्र का रोष कम हो रहा था। दिनभर का सफ़र तय करके गुलाल (गेंदें) की तरह धमकते हुए पानी में सूर्य अस्त हो रहा था। आकाश अत्यंत निखर गया था और नारंगी रंग दूर-दूर तक फैला नज़र आ रहा था।

पर्याप्त समय तक विश्राम करने के पश्चात अब आमिर स्वयं को ऊर्जावान महसूस कर रहा था। उसने बिस्तर से उठकर इधर-उधर देखा। अम्मार केबिन में मौजूद नहीं था। आमिर उसकी तलाश में बाहर निकल गया। उसका भाई जहाज़ के दल के साथ मिलकर बिखरे हुए सामान को पुनः व्यवस्थित करने में लगा हुआ था। मूर्ति का बक्सा अब पुनः अपनी जगह पहुँचा दिया गया था। ज्यों ही वह बक्से की तरफ़ बढ़ा, अम्मार ने उसे देख लिया। वह उसे जबरन कमरे में विश्राम करने के लिए ले आया। आमिर के मना करने के बावजूद डॉक्टर ने उसका परीक्षण किया और उसकी ऊर्जा बहाल करने के लिए एक और इंजेक्शन लगाया। फिर उसे पूर्ण विश्राम करने की हिदायत दी और वापस चला गया। डॉक्टर के जाते ही आमिर ने अम्मार से पूछा: "मूर्ति वाले बक्से को तो कोई नुकसान नहीं पहुँचा है? मैंने देखा कि अधिकांश सामान की तोड़-फोड़ हुई है।" अम्मार ने उत्तर दिया, "लकड़ी के बक्से पर चढ़े हुए पतरे एक जगह से उखड़ गए हैं। बाकी हिस्सा ठीक है—अंदर मूर्ति का क्या हाल है, यह तो संदूक को खोलकर ही मालूम हो सकता है।"

आमिर ने उत्तर दिया, "हमें इसकी अनुमति नहीं है। हमें यह अमानत ज्यों की त्यों काहिरा के संग्रहालय के ज़िम्मेदार के हवाले करनी है। उसकी उपस्थिति में ही इसे खोला जाएगा।"

अम्मार ने कहा, "जो मूर्ति सैकड़ों साल से ज़िंदा है और अपनी तौहीन का बदला ले सकती है, वह बक्से के अंदर भी आराम से सो रही होगी। वैसे भी भैया, जब उसका जी कतरा होगा तो वह इन बंधनों से आज़ाद होकर समुद्र की सैर कर लेती होगी।"

इस बात पर दोनों ने ठहाका लगाया, किंतु यह ठहाका शीघ्र ही गले में घुटकर रह गया। एक फड़फड़ाता हुआ परिंदा खिड़की से दाखिल होकर अम्मार के कदमों में गिर पड़ा। उसके गले में एक चिट बंधी हुई थी। अम्मार ने शीघ्रता से वह चिट उतार ली। परिंदा खिड़की से बाहर उड़ गया। आमिर ने बेताबी से कहा: "अम्मार, इसे पढ़ो। क्या लिखा है?"

अम्मार ने पढ़ना शुरू किया। लिखा था: "नादान लड़को! अब भी तुम्हारी आँखें नहीं खुलीं? क्या"

समुंद्री तूफ़ान मेरी नाराजगी का इज़हार न था? मैं चाहता तो मैं इस जहाज़ को समुद्र के गहरे पानी में डुबो देता। लेकिन तुम लोगों के साथ सैकड़ों बेगुनाह लोगों की जानें भी जातीं—क्या आमिर के बाज़ुओं में इतनी ताक़त थी कि वो खौफ़नाक लहरों का मुक़ाबला कर सकता है? क्या वो रस्सा खुद-ब-खुद उछल कर साँप की मानिंद इस के गिर्द लिपट गया था? अगर तुम लोग ऐसा समझते हो तो बड़े नादान हो—आज नहीं तो कल तुम्हें मेरे वजूद को स्वीकार करना होगा— ---------- मूर्ति।

दोनों भाइयों ने हैरत से एक दूसरे की तरफ़ देखा और फिर आमिर ने कहा "मुज़रिम कितना -दलेर है, हम से चूहे बिल्ली का खेल खेल रहा है—अफसोस! हम अभी तक उस का सुराग लगाने में नाकाम रहे हैं।"

"भाइ! मेरा ख़्याल है मुज़रिम आज रात ज़रूर कोई कार्रवाई करेगा—हमें होशयारी से बक्स की हिफ़ाज़त करनी होगी।"

आमिर ने जवाब दिया "तुम्हारा ख़्याल दुरुस्त है—हम आज इस मुज़रिम को पकड़ने में ज़रूर कामयाब होंगे—अब हमें आराम करना चाहिए, क्यों कि हमें रात भर जागना है।"

इस के बाद दोनों भाई अपने बिस्तरों पर लेट गए।

जहाज़ समुद्र की विस्तार में फैले हुए अँधेरे में रेंग रहा था, और डेक पर फैले हुए सामान के दरमियान कोई साया मूर्ति के बक्स की तरफ बढ़ रहा था। आमिर ने कोहनी मार कर अम्मार को होशियार किया—दोनों भाई एक ट्रीकटियार की आड़ में छिपे हुए थे—जहाज़ का अमला और मुसाफ़िर गहरी नींद सो रहे थे और जहाज़ में सन्नाटा छाया हुआ था। अम्मार ने भाई के इशारे पर साए की तरफ़ देखा और फिर दोनों तैयार होकर बैठ गए—ज्यों ही साया मूर्ति के संदूक के पास आया और उस ने हथौड़ा और दूसरे औजार निकाल कर ज़मीन पर रखे, दोनों भाई आहिस्ता आहिस्ता उस की तरफ़ बढ़ने लगे—और जब उन की निगाहें उस साए के चेहरे पर पड़ीं तो एक दफ़ा फिर हैरत का पहाड़ उन पर टूट पड़ा—ये हेशाम था—उस ने अपने हथौड़े से मूर्ति के बक्स पर चोट मारी तो दोनों भाई आड़ में से निकल कर उस के सामने आ गए।

"हेशाम! ये तुम क्या कर रहे हो?" आमिर ने डाँट कर कहा।

हेशाम ने लापरवाही से जवाब दिया "आँखें रखते हुए भी अंधों की तरह सवाल कर रहे हो? क्या जानते नहीं, मैं जहाज़ पर बढ़ई का काम करता हूँ—टूटे हुए सामान की मरम्मत करना मेरे कर्तव्यों में शामिल है—इस बक्स पर से धातु के पतरे उखड़ गए हैं—मैं इन्हें दोबारा लगा रहा हूँ।"

अम्मार ने सवाल किया "तुम ने इस काम के लिए कप्तान से अनुमति ले ली है?"

हेशाम ने नफ़रत से जवाब दिया "क्या ये ज़रूरी है कि मैं अपना कर्तव्य अदा करने के लिए हर बार कप्तान से मंजूरी लूँ ?"

ये कह कर उस ने संदूक के टूटे हुए हिस्से की मरम्मत शुरू कर दी—आमिर और अम्मार बेबसी से कभी उसे और कभी एक दूसरे को देखते—जब तक उन के पास कोई ठोस सबूत न होता, वे उस का कुछ बिगड़ न सकते थे।

सुबह को दोनों भाई कप्तान के केबिन में बैठे नक्शा देख रहे थे कि कप्तान एक कागज़ हाथ में लिए अंदर आया और बोला:

"यह रेडियोग्राम तुम्हारे नाम है।

आमिर ने कागज़ लेकर पढ़ना शुरू किया। लिखा था: "आमिर और अम्मार, क्या आप दोनों रुबासा आ सकते हैं? आपके लिए हेलीकाप्टर भेज दिया जाएगा। एक घंटे के अंदर-अंदर जवाब दें। — ----------सफ़दर जाविद, पाकिस्तानी राजदूत बरावए रुबासा।

दोनों भाइयों ने एक-दूसरे की तरफ़ हैरत से देखा, और फिर आमिर ने कहा, "ऐसे हालात में हम इस बक्से को छोड़कर कैसे जा सकते हैं। और फिर हमें यह भी नहीं पता कि राजदूत साहब हमें क्यों बुला रहे हैं।

"आश्चर्य है! इन्हें हमारी जहाज़ पर मौजूदगी का कैसे ज्ञान हो गया?" अम्मार बोला।

नज़ीर और इरफ़ान भी रेडियोग्राम का संज्ञान कर वहाँ आ गए थे।

आमिर ने अम्मार की बात का उत्तर देते हुए कहा, "खैर, यह तो कोई मुश्किल बात नहीं। बहुत संभव है कि राजदूत ने हमारे घर पर काल की हो और माता जी ने उन्हें हमारे कार्यक्रम से अवगत कर दिया हो।

आमिर ने कप्तान से पूछा, "आपका क्या ख्याल है? हमें क्या करना चाहिए? आप तमाम हालात से अच्छी तरह वाकिफ हैं।

कप्तान ने जवाब दिया, "मेरा ख्याल है तुम लोगों को अपने देश के राजदूत की बात मान लेनी चाहिए। बाकी रह गई इस मूर्ति के बक्से की सुरक्षा, तो मैं भी इस पर नज़र रखूँगा, और तुम्हारे ये दोस्त भी इसकी निगरानी करेंगे। अगर तुम्हें राजदूत ने जल्दी मुक्त कर दिया तो तुम हमें हेलीकाप्टर के ज़रिए मिस्र की बंदरगाह सिकंदरिया पर मिल सकते हो। वहाँ जहाज़ काफी देर रुकेगा।

"शुक्रिया, कप्तान साहब," आमिर ने कहा और फिर दोनों भाई अपने केबिन की तरफ़ तैयारी करने के लिए चल दिए।

केबिन में आने के बाद अम्मार ने आमिर को सोच में डूबे देखा तो पूछा, "क्या सोच रहे हो? लगता है तुम्हारा दिल संतुष्ट नहीं है।

"तुम्हारा ख्याल दुरुस्त है। ज़रा तुम भी गौर करो—हमें इस मूर्ति से दूर रखने की ये साज़िश भी हो सकती है। मूर्ति की प्लास्टिक की पोशाक पर लक्सर का नाम देखने के बाद मैंने अनुमान लगाया कि चोरी लंका के राजधानी कोलंबो के संग्रहालय से हुई है, लेकिन इसका ताल्लुक मिस्र के इलाके लक्सर से ज़रूर है और यह भी मुमकिन है कि किसी ऐसे समूह ने जिसका उद्देश्य मूर्ति को प्राप्त करना है, पाकिस्तानी राजदूत का नाम इस्तेमाल करके हमें अपहरण करने का कार्यक्रम बनाया हो।

अम्मार ने कहा, "अगर तुम्हारा ख्याल सही भी है तो भी हमें चोरों का पता लगाने के लिए लक्सर जाना होगा। एक जासूस की ज़िंदगी खतरों में घिरी होती है। खतरे में पड़े बिना अपराधियों तक पहुँचना संभव नहीं है—मेरा ख्याल है हमें ये खतरा ज़रूर मोल लेना चाहिए।

"ठीक है। खतरा मोल लिए बिना कोई काम भी नहीं हो सकता," आमिर सोचते हुए बोला।

इसके बाद दोनों भाई जहाज़ के डेक पर आ गए, जहाँ कप्तान के अलावा नज़ीर और इरफ़ान भी इन्हें विदा कहने के लिए मौजूद थे। कप्तान ने इन्हें बताया कि वायरलेस पर रुबासा में निवासरत पाकिस्तानी राजदूत को तुम लोगों की सहमति की सूचना दे दी गई है।

उसी वक्त दूर से इन्हें एक बिंदु सा आता नज़र आया। कप्तान ने कहा:

"हेलीकाप्टर है, शायद...इधर ही आ रहा है।"

देखते ही देखते हेलीकाप्टर जहाज़ के करीब आकर डेक पर उतर गया और दोनों भाई उसमें सवार हो गए।

मूर्ति के हरकारे

ज्यों ही हेलीकाप्टर आकाश में बुलंद हुआ, आमिर ने पायलट से सवाल किया: "क्या आप बता सकते हैं कि हमें राजदूत साहब ने क्यों बुलाया है?"

पायलट ने जवाब दिया, "इसका जवाब मेरे पास नहीं, और न इस किस्म का जवाब देने की मुझे अनुमति है। मेरी ड्यूटी सिर्फ़ आदेश की पालना करना है। मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आपको रुबासा के द्वीप के राजधानी लोमा में उतार दूँ."

हेलीकाप्टर काफ़ि देर उड़ता रहा और इस अर्से में पूर्ण खामोशी छाई रही—आख़िरकार पायलट ने इस खामोशी को तोड़ा और नीचे इशारा करके इनको बताया कि हम अब रुबासा के द्वीप पर उड़ान भर रहे हैं।

हेलीकाप्टर आहिस्ता-आहिस्ता नीचे उतर रहा था—सफ़र समाप्त हो गया और फिर हेलीकाप्टर ने आख़िरकार ज़मीन को छू लिया।

हेलीकाप्टर का इंजन बंद करने के बाद पायलट ने उसका दरवाजा खोल दिया। आमिर और अम्मार ने एक सुंदर लेकिन सबल आदमी को काले शीशों का चश्मा लगाए अपनी तरफ़ बढ़ते देखा। उसके पीछे एक काले रंग की कार खड़ी थी, जिसकी विंड स्क्रीन भी काली थी और दरवाजों के शीशे भी डार्क रंग के थे। उस आदमी ने आगे बढ़कर अपना परिचय करवाया:

"मुझे अय्यूब खटक कहते हैं। आप दोनों को पाकिस्तानी दूतावास पहुँचाने की ड्यूटी मेरी है। कार में बैठ जाएँ—ज़रा जल्दी करें, इसलिए कि इस द्वीप पर मौत दबे पाँव इंसान की तरफ़ बढ़ती है."

आमिर ने कहा, "मौत से खेलना हमारा प्रिय शौक है। जहाँ तक कार में बैठने का संबंध है, तो यह उस वक्त तक संभव नहीं जब तक आप पहचान पत्र न दिखा दें."

अय्यूब ने पर्स से पहचान पत्र निकाल कर दिखाया जिस पर उसका पद और तस्वीर लगी हुई थी, और फिर मुस्कुराकर कहा:

"अगर आप लोग संतुष्ट हो गए हों तो कार में बैठ जाएँ."

कार के अंदर दो आदमी स्टेन गन लिए बैठे थे। आमिर ने फ्रंट सीट पर नज़र डाली तो वहाँ भी एक आदमी राइफल लिए मौजूद था। अभी आमिर खतरे को सूँघ भी न पाया था कि दोनों भाइयों को अंदर धकेल दिया गया। उसी वक्त बाहर से किसी ने स्टेन गन का बर्स्ट मारा—कार के शीशे बुलेट प्रूफ थे, इसलिए गोलियाँ उन पर लगकर फिसलती चली गईं।

अय्यूब बिजली की सी तेजी से फ्रंट सीट का दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुआ और कार फर्राटे भरती हुई रवाना हो गई। थोड़ी दूर जाकर आमिर ने अय्यूब को संबोधित करते हुए कहा:

"ये सब क्या है?"

अय्यूब ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैंने कहा था कि यहाँ मौत दबे पाँव इंसान की..."

अम्मार ने सवाल किया, "आप हमें कहाँ ले जा रहे हैं? क्या हमें अपहरण किया जा रहा है?"

अय्यूब ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "आपको जल्दी ही सब कुछ मालूम हो जाएगा। आख़िर इतनी घबराहट क्या है? जासूस का दिल लोहे का और कलेजा पत्थर का होता है। लेकिन आप तो किसी किस्म के इम्तहान में पड़ने से पहले ही बौखला गए हैं।"

आमिर ने अम्मार की तरफ़ देखा और फिर दोनों खामोश हो गए।

कार तेज़ी से सफर करती हुई एक ऐसे इलाके में दाखिल हो गई जहाँ दूर दूर तक चट्टानें फैली हुई थीं और उनके दरम्यान से सड़क साँप की तरह बल खाती जा रही थी। अचानक इन्होंने चट्टानों की ओट से पंद्रह-बीस मोटरसाइकिल सवार निकलते देखे। इन्होंने कार का पीछा शुरू कर दिया। कार ड्राइवर ने कार की स्पीड बढ़ा दी। दूसरी तरफ़ मोटरसाइकिल सवारों ने भी उसी स्पीड पर अपनी मोटरसाइकिलें छोड़ दीं। उनका लीडर हेलमेट पहने वास्कट मोटरसाइकिल पर सवार था। वह सब कार के दाएँ और बाएँ रहकर इस कोशिश में थे कि कार को धकेलकर इन खतरनाक चट्टानों से टकरा दें।

यह रेस अत्यंत खतरनाक थी। कई दफ़ा मुड़ते हुए कार चट्टानों से टकराते-टकराते बची और कई जगह इसके उलट जाने का ख़तरा हुआ। आमिर और अम्मार को आश्चर्य था कि ये नौजवान मोटरसाइकिल सवार कौन हैं और इस किस्म की हरकत से उनका उद्देश्य क्या है? आख़िर भीषण स्थिति और ज्यादा खतरनाक हो गई और ड्राइवर ने अंधाधुंध कार की रफ्तार को तेज कर दिया तो आमिर से न रहा गया। उसने कहा: "शायद ये लोग आपके दोस्त हैं।"

"इस बात का अंदाज़ा आपने कैसे लगाया, हालांकि जिंदगी और मौत कार के दाएँ-बाएँ से गुजर रही है?" अय्यूब ने पूछा।

"इसलिए कि आप इनके खिलाफ हथियार इस्तेमाल नहीं करते," आमिर बोला।

अय्यूब ने जवाब दिया, "अफसोस! हमें असलाह इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं है।"

"चाहे ये लोग इस कार को चट्टानों से टकराकर टुकड़े टुकड़े ही क्यों न कर दें?" आमिर ने कहा।

अम्मार ने कहा, "दुनिया में शांति की इससे बड़ी मिसाल कहीं नहीं मिलेगी।"

अय्यूब ने बड़े धैर्य से अपने होंठ दाँतों में दबाते हुए कहा: "ये हमारे हथियारों की कृपा है कि ये लोग सिर्फ़ पीछा ही कर रहे हैं, वरना अब तक गोलियों की बारिश भी हो सकती थी।"

इससे पहले कि आमिर या अम्मार कुछ कहते, कार एक चट्टान से टकराकर ज़ोर से उछली। अंदर बैठे हुए लोगों के सिर छत से टकरा गए लेकिन खैरियत यह हुई कि कार चट्टान से टकराकर उसके ऊपर से होती हुई दूसरी तरफ़ सड़क पर इस तरह जा गिरी कि इसके चारों पहिए ज़मीन से जा लगे, वरना इसके उलट जाने में कोई कसर बाकी न रही थी। कार के अंदर बैठे हर आदमी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। एक दफ़ा फिर आमिर ने सवाल किया: "इन दो गुटों के टकराव से भला हमारा क्या वास्ता है? हमें यहाँ क्यों लाया गया है?"

अय्यूब ने जवाब दिया, "आपका भी इस टकराव से वही संबंध है जो हमारा है, और इस संबंध के बारे में...हम बहुत जल्द जान जाएंगे।"

अब कार चट्टानों वाले खतरनाक रास्ते को पार करके आ गई थी और मोटरसाइकिल सवारों का समूह अचानक ही उन चट्टानों में गुम हो गया था। फिर जल्दी ही कार एक जर्जर सी इमारत के सामने आ रुकी, जिस पर इम्पीरियल होटल का खस्ता और टूटा हुआ बोर्ड लगा था।

अय्यूब इन लोगों को लेकर उस होटल की इमारत में दाखिल हो गया—बाकी आदमी कार ही में रह गए। एक लंबी गलियारे से गुजरने के बाद वह एक कमरे में दाखिल हुए, जहाँ काउन्टर पर अय्यूब ने एक शख्स को अपना कार्ड दिखाया और वह उसके पीछे-पीछे एक गलियारे से गुजरते हुए एक छोटे कमरे में दाखिल हो गए और इसके बाद एक अंधेरे से तहखाने की सीढ़ियाँ उतरने लगे। सीढ़ियों के अंत पर एक दरवाजा था जो अंदर से बंद था। अय्यूब ने तीन बार दरवाजे पर दस्ताक दी—थोड़ी देर इंतज़ार के बाद किसी के कदमों की चाप सुनाई दी और फिर दरवाजा खुल गया।

ज्यों ही आमिर और अम्मार की नजर दरवाजा खोलने वाले पर पड़ी, उनके मुँह आश्चर्य से खुले के खुले रह गए। इस अंधेरे तहखाने के इस अंधेरे कमरे में उनके सामने उनके डैडी शहाब जैदी खड़े मुस्कुरा रहे थे। जैदी साहब ने अपने बेटों को सीने से लगा लिया और अंदर कमरे में ले गए, जहाँ दो अधेड़ उम्र के आदमी पहले से मौजूद थे। शहाब साहब ने परिचय करवाते हुए कहा:

"ये मेरे बेटे—आमिर और अम्मार हैं—और ये हैं रुबासा में पाकिस्तान के राजदूत."

दोनों भाइयों ने राजदूत से हाथ मिलाया—इसके बाद शहाब साहब ने दूसरे शख्स का परिचय करवाते हुए कहा "और आप हैं कर्नल नजीब—रुबासा की गुप्त पुलिस के चीफ."

परिचय के बाद आमिर और अम्मार ने मोटरसाइकिल वाले समूह के बारे में बताया तो शहाब जैदी ने जवाब दिया "बेटे! ये वह अत्यंत खतरनाक समूह है जो इस देश में क्रांति की तैयारी कर रहा है और मौजूदा सरकार का तख्त उलटना चाहता है। इन लोगों को निकटवर्ती द्वीप मेल बिन के रास्ते असलाह (हथियार) पहुँच रहा है और वहाँ की

सरकार इनकी सहायता कर रही है—इसी विद्रोह को विफल करने के लिए मुझे यहाँ भेजा गया है और मैंने अपनी सहायता के लिए तुम दोनों को बुलवाया है—लेकिन तुम ये बताओ कि मूर्ति के बक्से का क्या प्रबन्ध करके आए हो?"

आमिर ने जवाब दिया "उस की फ़िक्र न करें—जहाज़ के कप्तान हमीद राशदी के अलावा हमारे दोस्त इरफ़ान और नज़ीर भी उसकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं—आप ये बताएँ कि हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?"

शहाब साहब की बजाए गुप्त पुलिस के चीफ कर्नल नजीब ने जवाब दिया "हमारे साथ समस्या ये है कि हमारे तमाम आदमी स्थानीय यानी इसी देश के हैं, इसलिए बाग़ी हम को पहचानते हैं—हम जहाँ भी जाते हैं, उन लोगों को इस का ज्ञान हो जाता है—तुम लोग हमारे लिए बेहतर काम कर सकते हो, क्योंकि बाग़ी तुम से अच्छी तरह परिचित नहीं हैं."

आमिर ने कहा "आप हमें बताएँ, हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?"

कर्नल नजीब ने कहा "ज़रा गौर से सुनो—लोमा शहर में एक यहूदी का मकान) है जहाँ एक ईसाई न्यूटन कई साल से रहता है—हमें इत्तला मिली है कि न्यूटन बाग़ियों का सरगना है, और यही मकान उनका हेडक्वार्टर है।

चंद रोज़ से इस मकान का नल खराब है, और मालिक मकान उस की मरम्मत कराना चाहता है—तुम दोनों वहाँ प्लंबर की हैसियत से जाओगे और असलहे के गोदाम का पता चलाओगे।

आमिर ने कहा "लेकिन हम तो नल की मरम्मत करने का काम बिल्कुल नहीं जानते।"

कर्नल नजीब ने जवाब दिया "इस की फिक्र मत करो—मरम्मत की नौबत ही नहीं आएगी।"

शहाब साहब ने कहा "बाहर एक वैन खड़ी है, जिसमें औज़ार और लिबास मौजूद हैं—और यह रहा मालिक मकान अज़्रा यहूदी का ख़त, जिस में उस ने प्लंबर यूनियन को लिखा है कि उस के मकान के नलों को चेक किया जाए—देर मत करो—इसी वक्त रवाना हो जाओ।"

बाग़ियों का गढ़

दरवाज़ा खोलने वाला खुद न्यूटन ही था—आमिर ने अज़्रा यहूदी का ख़त उस की तरफ़ बढ़ाते हुए कहा "अगर आप मिस्टर न्यूटन हैं तो इस मकान के मालिक अज़्रा यहूदी का ये ख़त मुलाहिज़ा फ़रमाएँ —उन्होंने लोमा प्लंबर यूनियन को अपने मकान के नलों को चेक करने के लिए कहा है।"

ख़त देखने के बाद न्यूटन ने आमिर और अम्मार को गौर से देखा जो प्लंबरों के लिबास में थे, और फिर सोच कर बोला "तुम अंदर आ सकते हो—मेरे साथ मेरी माँ रहती है जो इस वक्त बाहर गई हुई है—तुम मकान का तहखाना और

बाथरूम वगैरह चेक कर सकते हो—और ज़रा जल्दी करना क्योंकि मेरी माँ किसी गैर शख्स का घर में आना पसंद नहीं करती।"

अंदर दाखिल होने के बाद अम्मार ने आमिर से कहा "मैं तहखाने के पाइप चेक करता हूँ और तुम ऊपर के हिस्से को देख लो।"

अम्मार तहखाने की सीढ़ियाँ उतरने लगा तो उस ने अपने पीछे न्यूटन के कदमों की चाप सुनी—वह उस के पीछे-पीछे आ रहा था—तहखाने में आने के बाद अम्मार ने एक कमरे के दरवाजे पर ताला पड़ा देखा तो न्यूटन से कहा "ज़रा इस कमरे के ताले को खोल दें ताकि पाइप में पाइप को चेक कर लूँ।"

न्यूटन ने नागवारी से जवाब दिया "इस कमरे में जाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि इस में से कोई पाइप नहीं गुजरता—शायद तुम अपनी आँखें बंद करके काम करने के आदी हो।"

अम्मार समझ गया कि इस बंद कमरे में ज़रूर कोई ऐसी चीज़ है जिस के लिए न्यूटन ने यहाँ ताला लगा रखा है—दूसरी तरफ़ आमिर ने ऊपर के तमाम कमरों को चेक करना शुरू कर दिया—उसे किसी भी कमरे में ऐसे आसार न मिले जिन से मालूम होता कि यहाँ कुछ है— आखिर वह न्यूटन के बेड रूम में घुस गया और उस की हर चीज़ का गौर से मुआयना शुरू कर दिया—एक छोटी सी मेज पर एक तह किया हुआ कागज़ पड़ा था—उस ने खोल कर पढ़ा —"असलहे का नया स्टाक रवाना कर दिया गया..."

82

स्टोर किए हुए हथियारों को हिफ़ाज़त से इस्तेमाल करो और कोई भी कदम उठाने से पहले लक्सर से संपर्क करो;-- इसके साथ एक फोन नंबर भी था।

ख़त में लक्सर का नाम देखकर आमिर आश्चर्य में पड़ गया—मिस्र के इस शहर का रुबासा से क्या संबंध हो सकता है? उसी वक्त सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़ सुनाई दी। आमिर जल्दी से गुसलखाने (स्नानघर) में जा घुसा और ख़्वाह-मख़्वाह एक बोल्ट को खोलना शुरू कर दिया। उसका दिमाग उस तहरीर और फोन नंबर में उलझा हुआ था। उसे उस वक्त होश आया जब बोल्ट खुलकर नीचे गिर पड़ा और पानी की धार उसके मुंह पर पड़ने लगी।

इसी वक्त न्यूटन और अम्मार अंदर दाखिल हुए। आमिर ने पानी को बंद करने की कोशिश की लेकिन पानी के दबाव की वजह से बोल्ट को ठीक से फिट करने में नाकाम रहा। न्यूटन ने उसकी इस हरकत पर ठहाका लगाया। यह देखकर अम्मार भाई की मदद को लपका और बड़ी मुश्किल से दोनों भाई बोल्ट को कसने में सफल हुए। दोनों के कपड़े भीग गए थे।

बोल्ट कसने के बाद वह वापस अपनी वैन में आए तो अम्मार ने आमिर को बताया कि तहखाने में एक कमरा ऐसा है जिसमें ताला लगा हुआ है। मेरा ख्याल है उसमें कोई खास चीज़ मौजूद है।

आमिर ने कहा, "वह खास चीज़ हथियार ही हो सकती है।" यह कहकर उसने उस तहरीर के बारे में अम्मार को बताया। अम्मार ने खुश होकर कहा, "यकीनन असलहा उसी कमरे में मौजूद है।"

आमिर ने कहा, "शुक्र है वह कमबख्त बोल्ट काबू में आ गया, वरना हमारा सारा बहुरूप खुल जाता। अनाड़ी और कारीगर के फर्क को शायद न्यूटन पहचान नहीं सका।"

अम्मार ने जवाब दिया, "पहचान जाता तो उस मकान से बाहर निकलना हमारे लिए इतना आसान न होता। अब क्या इरादा है?"

आमिर ने जवाब दिया, "इस कार्रवाई की रिपोर्ट हमें होटल के काउंटर क्लर्क को देनी होगी। वह उसे डैडी और कर्नल नजीब को पहुंचा देगा।" उन्होंने एक पब्लिक फोन बूथ से अपनी रिपोर्ट होटल के काउंटर क्लर्क को दी।

इसके बाद आमिर ने न्यूटन के बेडरूम वाले नंबर पर फोन किया और न्यूटन की आवाज़ में रिसीवर उठाने वाले को संबोधित करते हुए कहा:

"अपने मौजूदा मंसूबे (योजना) के बारे में बताओ। यह इसलिए ज़रूरी है कि सी.आई.डी. को हमारे मंसूबे के बारे में पता चल गया है। अभी-अभी मेरे आदमियों ने मुझे सूचना दी है।"

दूसरी तरफ वाले आदमी ने थोड़ी नाराजगी से जवाब दिया, "न्यूटन, तुम्हें मालूम नहीं कि इस किस्म की बातें टेलीफोन पर करने की मनाही है? तुम्हें जो कुछ भी मालूम करना है, बेकिन आकर मालूम करो।" और इसके साथ ही दूसरी तरफ से संपर्क समाप्त हो गया।

आमिर ने अम्मार से कहा, "जानते हो उस आदमी ने क्या जवाब दिया है? उसने बेकिन बुलाया है। न जाने यह बेकिन क्या बला है?"

"बेहतर होगा कि हम पुलिस के किसी सिपाही से मालूम करें," अम्मार बोला।

दोनों लोमा के रौनक बाज़ार में आ गए, जहाँ...

एक पुलिस सार्जेंट ट्रैफिक कंट्रोल कर रहा था। उन्होंने उससे बेकिन के बारे में पूछा तो उसने जवाब दिया, "बेकिन एक पहाड़ी है, जिस पर एक बिजली घर की इमारत है।" फिर उसने उनको रास्ते के बारे में विस्तार से बताया।

दोनों भाई वैन में बैठकर रवाना हो गए और आखिर उस पहाड़ी के पास पहुँच गए जिसके ऊपर घनी झाड़ियों में वह बिजली घर मौजूद था। उन्होंने अपनी वैन एक जगह छुपा दी और खुद पैदल ही झाड़ियों में से रास्ता बनाते हुए बिजली घर की पुश्त (पीठ) की तरफ से ऊपर चढ़ने लगे। उन्होंने जानबूझकर सीधे रास्ते को छोड़ दिया था ताकि किसी आने जाने वाले की नज़र में न आ सकें। यह रास्ता दुश्वार गुज़ार था और कांटेदार झाड़ियों से भरा था—लेकिन वह कांटों की परवाह न करते हुए, फिसलते, गिरते और कांटों से उलझते हुए ऊपर चढ़ते चले गए। एक जगह उन्होंने चंद मोटरसाइकिलें झाड़ियों में खड़ी देखें। आमिर ने अम्मार से कहा:

"तो यह है उन मोटरसाइकिल सवार बाग़ियों का हैडक्वार्टर।"

वह झाड़ियों में छिपते हुए इमारत की पुश्त पर एक खिड़की के पास पहुँच गए। खिड़की खुली हुई थी, आमिर ने अंदर झाँककर देखा। कमरे में पाँच नौजवान बैठे आपस में बातचीत कर रहे थे। एक नौजवान कह रहा था, "दिलावर, अब वह दिन दूर नहीं जब तुम इस मुल्क के डिक्टेटर होगे—मौत के हरकारों का ख़्वाब पूरा हो जाएगा।"

दूसरे ने कहा "ज़्यादा सेवाएं दिलावर ने ही अंजाम दी हैं—कई दफ़ा मौत के मुँह से वापस आया है—इस ओहदे का यही सब से ज़्यादा हकदार है।"

उन की बातों से आमिर और अम्मार ने अंदाज़ा लगाया कि यही लोग बाग़ियों के लीडर हैं—अचानक पीछे से किसी मोटरसाइकिल की आवाज़ आई—वह जल्दी से झाड़ियों में छिप गए और झाड़ियों की ओट से मोटरसाइकिल सवार को देखा—उसने हैलमेट पहन रखा था—वह मोटरसाइकिल बंद करके कमरे में दाखिल हो गया—आमिर और अम्मार भी झाड़ियों से निकलकर दोबारा खिड़की के पास आ गए—आने वाले ने ज्यों ही अपना हैलमेट मेज पर रखा, दोनों भाइयों पर आश्चर्य के पहाड़ टूट पड़े—यह श्रीलंका के अजाइब घर की रसोइया एलिस थी।

एलिस ने आते ही कहा "दोस्तों, अब क्रांति के लिए तैयार हो जाओ—असलहे की खेप पहुँच गई है और उसे न्यूटन के घर के तहखाने में पहुँचा दिया गया है।"

आमिर ने अम्मार से फुसफुसाहट में कहा "तो वह पैगाम एलिस ने ही न्यूटन को दिया था जो उसके बेडरूम में पड़ा था।"

दिलावर ने प्रसन्न होकर एलिस को मुबारकबाद देते हुए कहा "बहुत खूब! एलिस, तुमने हमें रुपये उपलब्ध करा के और हथियार देकर बड़ी शान-दार सेवा अंजाम दी है—तुम्हें इस खिदमत का सिला भी शान-दार ही दिया जाएगा।"

उसके एक साथी इब्राहिम ने एलिस से सवाल किया "मिस एलिस, आख़िर इतने सारे रुपये तुमने कहाँ से हासिल किए?"

एलिस ने मुस्कुराकर जवाब दिया "रुपये के लिए...

--मुझे श्रीलंका के अजायब घर में बावर्ची की हैसियत से काम करना पड़ा। मैंने वहाँ से कुछ कीमती मूर्तियाँ और अन्य चीजें चोरी करके मिस्र के एक सौदागर के हाथ बेच दीं और उस रुपये से हथियार खरीदे। यह हथियार इस जज़ीरे (द्वीप) के उत्तर में स्थित एक जज़ीरे से बल बन की हुकूमत के सहयोग से रातों-रात रुबासा पहुँचाकर न्यूटन के मकान में स्टोर कर दिए गए हैं। अब मुझे वापस जाना है—ज़्यादा देर यहाँ नहीं रुक सकती।"

आमिर और अम्मार पहाड़ी से उअंधेरे र अपनी वैन के पास आए और फिर आँधी-तूफान की तरह एक पब्लिक टेलीफोन बूथ में जाकर पाकिस्तान के राजदूत सफदर जावदानी को सारी रिपोर्ट देते हुए कहा: "सर, यह एक्शन जल्दी ही होना चाहिए—इसी स्थिति में मौत के हरकारों वाला बाग़ी गिरोह गिरफ्तार किया जा सकता है।"

इसके बाद उसने उस जगह के संबंध में बताया जहाँ से उसने फोन किया था।

राजदूत ने कहा "मैं कर्नल नजीब को सूचना दे रहा हूँ—वह जल्द ही तुम से मिलेंगे।"

आमिर फोन बंद करके बाहर आ गया और कर्नल नजीब और उसके सिपाहियों का इंतजार करने लगा। उसे एक-एक मिनट एक साल के बराबर लग रहा था। थोड़ी ही देर बाद उसने एक पुलिस जीप और सिपाहियों से भरा हुआ ट्रक देखा जो उनके करीब आकर रुक गया। दोनों भाई उसमें बैठ गए। उन्होंने सबसे पहले न्यूटन के मकान पर छापा मारा। लेकिन इसे देखकर बड़ी निराशा हुई कि मुख्य द्वार खुला पड़ा था और न्यूटन गायब था। तहखाने वाला कमरा भी खुला पड़ा था और बिल्कुल खाली था।

कर्नल नजीब ने आश्चर्य से आमिर और अम्मार की तरफ देखा तो आमिर ने कहा: "उन्होंने असलहा यहाँ से निकाल लिया है—लेकिन वह अभी हमारी गिरफ्त से बाहर नहीं हैं—आपको बेकिन पहाड़ी वाले बिजली घर पर छापा मारना चाहिए—मेरा ख्याल है, उन्होंने असलहा वहीं छुपाया है।"

कर्नल नजीब और उसके साथियों ने बेकिन पहाड़ी को घेरे में ले लिया। सिपाही पहाड़ी पर चढ़ रहे थे कि उस बिजली घर की इमारत से फायरिंग शुरू हो गई। कर्नल नजीब ने अपने आदमियों को आदेश दिया कि जवाबी फायरिंग करते हुए घेरा तंग करते जाओ—(खबरदार!) एक भी बाग़ी फरार न होने पाए।

दोनों तरफ से गोलियाँ बारिश की तरह बरस रही थीं—इस ऑपरेशन में पुलिस का ज्यादा नुकसान हो रहा था, क्योंकि वह खुले मैदान में थीं, जबकि बाग़ी इमारत के अंदर से उन पर फायरिंग कर रहे थे। आखिर पुलिस ने इस इमारत को चारों तरफ से घेर लिया।

कर्नल नजीब ने चिल्लाकर बाग़ियों से कहा: "तुम सब हमारी हिरासत में हो—फायरिन्ग बंद करके बाहर निकल आओ वरना इमारत को बमों से तबाह कर दूंगा।"

दूसरी तरफ से अचानक फायरिंग रुक गई। कर्नल नजीब ने हुक्म दिया "अब एक-एक करके बाहर आ जाओ।"

सबसे पहले हाथ उठा कर जो शख़्स बाहर निकला वह दिलावर था, और सबसे आखिर में आने वाला न्यूटन था। आमिर ने न्यूटन से पूछा "तुमने इतनी जल्दी असलहा अपने घर से यहाँ कैसे स्थानांतरित किया, और तुम्हें खतरे का..."

कैसे अहसास हुआ?

न्यूटन ने जवाब दिया, "तुम्हारी एक छोटी सी गलती से। तुमने पाइप के बोल्ट को खोल तो लिया था लेकिन तुम से वह फिट नहीं हो रहा था। मैंने उसी वक्त समझ लिया कि तुम प्लंबर नहीं हो। फिर मैं तुम्हारा ताक़ुब करता हुआ बेकिन पहुँचा तो पता चल गया कि तुम पुलिस के जासूस हो। तुम्हारे जाते ही हम ने असलहा वहाँ से उठाया । अगर तुम थोड़ा सा वक़्त और दे देते तो हम असलहा तरफ कश्तियों से मल बिन फरार होने में कामयाब हो जाते।"

अम्मार ने पूछा, "मिस एलिस कहाँ है?"

इस बार दिलावर ने जवाब दिया, "वह अब इतनी दूर जा चुकी है कि तुम उस तक नहीं पहुँच सकते। वक़्ती तौर पर यह इंकलाब रुक ज़रूर गया है लेकिन तुम इस सैलाब के सामने बाँध नहीं बाँध सकोगे। अब कोई दूसरी टीम, दूसरे गिरोह, इस काम को अंजाम देगी।"

रात के डिनर पर पाकिस्तानी राजदूत, शहाब ज़ैदी और कर्नल नजीब के अलावा आमिर और अम्मार भी मौजूद थे। कर्नल नजीब ने दोनों लड़कों की सेवाओं को सराहा और पाकिस्तानी राजदूत का शुक्रिया अदा किया। शहाब साहब ने कहा: "लड़को, अब रुबासा में तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। अपने असली मिशन पर रवाना हो जाना चाहिए। तुम्हारा जहाज़ एस्कंदरिया की बंदरगाह पर लंगर अंदाज़ होने वाला है, और तुम्हें एस्कंदरिया पहुँचाने वाली फ्लाइट भी तैयार है।"

काहिरा का अजायब घर

एस्कंदरिया के हवाई अड्डे पर उतरते ही दोनों भाई टैक्सी के ज़रिए बंदरगाह पहुँचे और फिर जहाज़ पर जाकर कप्तान, नफ़ीर और इरफ़ान से मिले। क्रेन के ज़रिए जहाज़ से सामान उतारा जा रहा था। कप्तान ने उन की मूर्ति का बक्सा उन के हवाले किया, जिस पर दोनों भाइयों ने उस का शुक्रिया अदा किया। फिर वह दोनों दोस्तों को अलविदा कह कर उस ट्रक में सवार हो गए जिस पर मूर्ति का बक्सा रख दिया गया था। यह ट्रक उन के लिए काहिरा के अजायब घर ने भेजा था। जब वह काहिरा पहुँचे तो अजायब घर की इमारत के बाहर एक आदमी प्रतीक्षारत था। उस ने अपना परिचय देते हुए कहा:

"मेरा नाम कमाल अनवर है। मैं जमाल अनवर का छोटा भाई और यहाँ के प्रबंधक प्रोफेसर जलाल अमीन का सहायक हूँ।"

चंद आदमियों ने ट्रक से बक्से को उतारा और उसे अंदर ले गए। कमाल अनवर ने दोनों भाइयों को अंदर ले जाकर कहा "हमारे इंचार्ज प्रोफेसर जलाल अमीन इस वक्त मौजूद नहीं हैं। लेकिन उन्हें सूचना दे दी गई है—अब उन की और आप दोनों की मौजूदगी में यह संदूक खोला जाएगा। फिर आप की ज़िम्मेदारी ख़त्म हो जाएगी—उस वक्त तक आप लोग अजायब घर की सैर करें।"

आमिर और अम्मार दुनिया के आश्चर्यजनक अजायब घर की सैर में व्यस्त हो गए। उन्होंने अजीब-ओ-ग़रीब फिरौन की ममियाँ भी देखीं और उन के सोने के बर्तन, लिबास और ताज आदि भी। वह हर चीज़ को आश्चर्य से देखते और तारीफ करते हुए आखिर फरोन मिस्र तुतनखामन की ममी के पास आकर खड़े हो गए—

उस के ताज पर मिस्र में पाए जाने वाले खास किस्म का काला नाग बना हुआ था—अम्मार ने कहा:

"बिल्कुल ऐसा ही रबर का साँप हमने अपने बिस्तर पर श्रीलंका के अजायब घर में भी देखा था।"

आमिर ने जवाब दिया, "यह साँप फिरौन का ट्रेडमार्क है। देखो, ऐसा लगता है कि फिरौन मरा हुआ नहीं बल्कि शांत नींद सो रहा है। ज़रा इसके वैभव और गरिमा पर भी नज़र डालो—सोने के बर्तन, कीमती फर्नीचर और हीरे-जवाहरात से जड़ा हुआ ताज। क्या यह सब शान-शौकत इंसानों के लिए एक सबक नहीं कि दुनिया के ऐश-ओ-आराम नश्वर चीजें हैं जिनकी कोई अहमियत नहीं? असल चीज़ इंसान के कर्म और आचरण हैं जो मरने के बाद भी कायम रहते हैं, बाकी हर चीज़ नष्ट हो जाती है।"

थोड़ी देर बाद कमाल अनवर ने आकर सूचना दी कि प्रोफेसर जलाल अमीन आ चुके हैं। जब वे हॉल में पहुँचे तो प्रोफेसर वहीं मौजूद थे। प्रोफेसर ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनका स्वागत किया और कहा, "मुझे खुशी है कि आपने इस मूर्ति को हम तक पहुँचा दिया है।"

इसके बाद उन्होंने अपने आदमियों को आदेश दिया कि संदूक से मूर्ति निकाली जाए। अजायब घर के आदमी औजार लेकर संदूक के पतरे वगैरह उखाड़ने लगे। इस दौरान अम्मार और आमिर प्रोफेसर से हँसी-मजाक में व्यस्त रहे, यहाँ तक कि संदूक को खोल दिया गया। और फिर दोनों भाइयों ने देखा कि अजायब घर के आदमियों के चेहरों की रंगत उड़ रही है—संदूक अंदर से खाली था और मूर्ति गायब थी!

एक मिनट तक हॉल में सन्नाटा छाया रहा। फिर प्रोफेसर ने आमिर से पूछा, "सोने की मूर्ति कहाँ है?"

आमिर ने जवाब दिया, "हमने पूरी तरह से जहाज पर उसकी सुरक्षा की है। संदूक इतनी मजबूती से बंद था कि उसमें से मूर्ति निकालना असंभव था। हाँ, एक विचार मेरे मन में आया है।"

प्रोफेसर ने कहा, "बताओ—वह कौन सा विचार है?"

आमिर ने जवाब दिया, "यह संभव हो सकता है कि एस्कंदरिया की बंदरगाह पर किसी ने बिल्कुल वैसा ही बक्सा पहले से तैयार रखा हो और उसे इस संदूक के साथ बदल लिया हो।"

प्रोफेसर ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह कोई बच्चों जैसा विचार है।"

अम्मार ने आमिर से कहा, "मेरा विचार है कि हमें चलना चाहिए। क्योंकि अजायब घर में डाली गई मूर्ति के सुनहरे लिबास पर उसी शहर की छाप लगी थी। तुमने न्यूटन के घर जो संदेश पढ़ा था उसमें भी लक्सर का जिक्र था। जहाँ तक मेरा विचार है, श्रीलंका के अजायब घर की चोरी का संबंध लक्सर से जरूर है। तुम मिस्र एलिस को रुबासा में देख चुके हो।"

आमिर ने प्रोफेसर से कहा, "आप चिंता न करें—हम इस अमानत को आपके हवाले करके ही जाएँगे।"

यहाँ से निकलते ही सबसे पहले आमिर और अम्मार ने जहाज के कप्तान, नफ़ीर और इरफ़ान को यह खबर सुनाई, तो कप्तान ने कहा, "तुम्हारा मूर्ति का बक्सा न तो जहाज पर बदला गया है और न बंदरगाह पर—क्योंकि हम सबकी आँखों के सामने हमने उसे ट्रक में रखा था।"

नफ़ीर ने अम्मार को बताया कि जहाज के स्टाफ का एक आदमी गायब है और वह है बढ़ई हिशाम।

आमिर ने कुछ सोचकर कहा, "अब हमें वक्त बर्बाद नहीं..."

दोनों भाई काहिरा के रौनक बाजार से गुजर रहे थे और दिलचस्पी से दुकानों को देखते चले जा रहे थे कि अचानक उनके कदम एक दुकान के सामने आकर रुक गए। यहाँ रबड़ के विभिन्न मास्क टंगे हुए थे। वे आगे बढ़ने लगे तो दुकानदार ने रोकते हुए कहा:

दोनों भाई काहिरा के परौनक बाजार से गुजर रहे थे और दिलचस्पी से दुकानों को देखते चले जा रहे थे कि अचानक उनके कदम एक दुकान के सामने आकर रुक गए। यहाँ रबड़ के विभिन्न मास्क टंगे हुए थे। वे आगे बढ़ने लगे तो दुकानदार ने रोकते हुए कहा:

"आप लोगों को शायद विभिन्न किस्म के मास्क चाहिएँ। अगर ये ठीक है तो अंदर तशरीफ लाएँ—इन से भी ज्यादा अजीब और गरीब रबड़ के मास्क हमारे पास मौजूद हैं।"

दोनों भाई उसके साथ दुकान के पिछले हिस्से में जाकर एक कमरे में दाखिल हो गए। यहाँ रोशनी कुछ कम थी। एक लम्हे के लिए उनके कदम रुक गए। कमरे के दरमियान बुद्ध की मूर्ति का सुनहरी प्लास्टिक का वही लिबास लटक रहा था जो उन्होंने जहाज पर कश्ती में देखा था।

अम्मार ने कहा, "ये तो वही लिबास है—ताज्जुब है कि यहाँ कैसे आ गया।"

दुकानदार ने नरमी से कहा, "आप इसे पास जाकर गौर से देखें।"

दोनों भाई लिबास की तरफ बढ़े और फिर अचानक उन्होंने अपने कदमों तले जमीन को हरकत करते महसूस किया। इससे पहले कि वे बचाव की कोई युक्ति करें, दोनों नीचे तहखाने में जा गिरे। यह एक छोटा सा कमरा था, जिसके एक तरफ लोहे का एक दरवाजा लगा हुआ था, जो बाहर से बंद था।

आमिर ने कहा, "इस दुकानदार ने ऐसा क्यों किया? इससे हमसे क्या दुश्मनी हो सकती है? हम पहली मर्तबा यहाँ आए हैं।"

उन्होंने बंद दरवाजे को पीटना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद दरवाजा खुला और चार आदमी अंदर दाखिल हो गए। इनमें एक हिशाम और दूसरा दुकानदार था, बाकी दो नए थे।

आमिर ने हिशाम से कहा, "तो यह तुम्हारी मेहरबानी है—आखिर तुम चाहते क्या हो?"

हिशाम ने जानने वाली निगाहों से उसे देखा और फिर कहा, "कभी चक्की में पिसते हुए गेहूँ को देखा है तुम ने? तुम दोनों ने जो ज़ख्म हमें लगाया है, उसका बदला लेने का वक्त आ गया है।"

अम्मार ने आमिर को विशेष इशारा किया। उसका मकसद था कि इन से "भिड़ पड़"

—देखते ही देखते दोनों भाइयों ने इस छोटे से कमरे को मैदान-ए-जंग बना दिया। उन्होंने चारों को अपनी फ्लाइंग किक और पंचों से पीटना शुरू कर दिया। लेकिन दो के मुकाबले में चार थे और वे भी हट्टे-कट्टे थे। आखिर दोनों भाई लड़ते-लड़ते थक गए और उन चारों ने उन पर काबू पा लिया। उसी वक्त दरवाजा खुला और उन्होंने मूर्ति वाले सुनहरी प्लास्टिक के लिबास में किसी को अंदर आते देखा। उस शख्स ने आते ही जोरदार क़हक़हा (ठहाका) लगाया। आमिर को फौरन याद आ गया कि श्रीलंका के अजायब घर में जिस रात को उसने मूर्ति देखी थी और जिस के हाथ में साँप था, उसने भी ऐसा ही भयानक ठहाका लगाया था।

आमिर ने कहा, "शायद यह हमारी दूसरी मुलाकात है—पहली श्रीलंका के म्यूजियम में हो चुकी है।"

उस आदमी ने जवाब दिया,

"दूसरी नहीं, मेरा ख्याल है, यह हमारी तीसरी मुलाकात है।" और इसके साथ ही उसने प्लास्टिक का मास्क अपने चेहरे से उतार दिया। आमिर और अम्मार ने उसे हैरानी से देखा। यह 'खफ़ाश' था, श्रीलंका के अजायब घर का चौकीदार!

आमिर ने नागवारी से कहा, "ओह! तो ये तुम थे जो जहाज पर भी हमसे आँख मिचौली खेलते रहे। मूर्ति कहाँ है?"

"जहाँ इसे होना चाहिए—सुनो! हमारा ताल्लुक उसी क्रांतिकारी जमात से है जिसे तुम गिरफ्तार करा चुके हो। अब तुम हमारे पास उस वक्त तक कैदी बनकर रहोगे जब तक तुम्हारा पिता रुबासा को छोड़कर हमेशा के लिए नहीं चला जाता—वह इंकलाब की राह में भारी पत्थर बना हुआ है।"

उन आदमियों ने इन्हें घेरे में लेकर बाहर निकाला, जहाँ दो कारें मौजूद थीं। एक कार में दो क्रूर जल्लाद बैठे हुए थे। दोनों भाइयों को उसी कार के अंदर धकेल दिया गया और फिर 'खफ़ाश' ने ड्राइवर को आदेश दिया: "लक्सर चलो!"

लक्सर में

दोनों कारें एक एयरपोर्ट पर आकर रुक गईं। यह हवाई अड्डा वीरान पड़ा था या फिर मरम्मत के लिए बंद था। चोरों का ग्रुप उन्हें लेकर एक छोटे जहाज में सवार हुआ और जहाज दरिया-ए-नील के साथ-साथ उड़ान भरने लगा।

अम्मार ने आमिर के कान में कहा है कि उस रोज़ खफ़ाश खंजर घोंपना चाहता था। लेकिन यह बात समझ में नहीं आती कि उसने जहाज में बक्से में से मूर्ति कैसे गायब की! मेरा ख्याल है यह नामुमकिन बात है।"

जहाज एक रेगिस्तान में आकर उतर गया। फिर उसमें से सारे आदमी, पायलट के सिवा, उतर आए, क्योंकि पायलट ने उनसे कहा था कि अब उसे वापस काहिरा जाना है—यह कोई किराए पर चलने वाला जहाज नहीं था।

उसी वक्त एक बस कुछ आदमियों को लेकर आई और उनके पास आकर रुक गई। 'खफ़ाश' ने उन दोनों से कहा: "इस बस में बैठ जाओ—भगाने की या किसी किस्म की चालाकी करने की कोशिश की तो तुम्हारी हड्डियों का सुरमा बना दिया जाएगा।"

चोरों का यह गिरोह दोनों भाइयों को बस में लेकर बैठ गया तो बस रवाना हो गई। वे एक ऐसे सहरा (रेगिस्तान) में से गुजर रहे थे जहाँ रेत के साथ-साथ चट्टानें, टीले और छोटी-छोटी पहाड़ियाँ भी थीं। अब सूरज डूब रहा था, और आहिस्ता-आहिस्ता अंधेरा फैल रही थी।

अम्मार इमरजेंसी गेट के पास बैठा था। उसके बाईं तरफ एक रक्षक था। आमिर के दाईं और बाईं दोनों तरफ रक्षक थे। अम्मार ने इमरजेंसी गेट को देखते ही एक फैसला कर लिया था और वह रात का अंधेरा फैलने का प्रतीक्षारत था। इस लिए कि इस सहरा (रेगिस्तान) में दिन के उजाले में फरार होना मुमकिन न था। अंधेरा होते ही आमिर ने आँखों के इशारे से अम्मार को इमरजेंसी गेट की तरफ ध्यान दिलाया । उसे क्या खबर थी कि अम्मार इस हथकंडे/युक्ति को अपनाने का पहले ही फैसला कर चुका है ।

जैसे ही बस एक पहाड़ी के ऊपर से गुज़री, बस में बैठे पैसेंजर्स को झटका लगा, और अम्मार ने जल्दी से अमीर ने एमरजेंसी गेट का हैंडल घुमाया, दरवाज़ा खोला, और अंधेरे में बाहर कूद गया। उसी समय, आमिर ने भी अपने गार्ड्स को धक्का दिया और बाहर कूद गया। यह सब इतनी तेज़ी से हुआ कि बस में चोरों का ग्रुप देखता रह गया। फिर उन्होंने हिशाम और ख़फ़ाश की दहाड़ सुनी, जो चिल्ला रहे थे, "बस रोको !"

जब बस रुकी, तो चोरों का एक ग्रुप बस से कूदकर आमिर और अम्मार को ढूंढने के लिए फैल गया। लेकिन अंधेरे की वजह से उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, और वे अंधेरे में अपने ही साथियों का पीछा कर रहे थे। आमिर और अम्मार एक गड्ढे में उतर गए और वहीं बैठ गए। लेकिन उनकी शांति ज़्यादा देर तक नहीं टिक सकी। उनके सामने एक काला साँप उन्हें डरा रहा था। नीचे साँप के रूप में मौत थी और ऊपर चोरों के रूप में। न तो वे बाहर जा सकते थे और न ही गड्ढे में रह सकते थे। वे इसी मुसीबत के बारे में सोच रहे थे कि

बाहर से ख़फ़ाश की आवाज़ सुनी। वह अपने दोस्तों से कह रहा था:

" अंधी भेड़ों की तरह इधर-उधर भाग रहे हो। इस गड्ढे में जाकर देखो! "

दोनों भाईयों की जान पर बन गई । लेकिन शायद कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। उसी समय, एक नेवला एक बिल से निकला और साँप पर हमला कर दिया। जब चोर गड्ढे की तरफ आए, तो उन्होंने साँप की खौफनाक फुँकार सुनी। वे बाहर रुक गए और हिशाम ने कहा: -

"यहां से तो ऐसा लगता है जैसे सांपों का अड्डा हो। नील नदी के किनारे पाए जाने वाले ये सांप इंसानों को अपने आस-पास बर्दाश्त नहीं करते। लड़के यहां नहीं आ सकते। कहीं और देखो।"

यह सुनकर दोनों भाईयों की जन में जान आई ।

अंदर नेवले ने साँप को मार दिया था और बाहर हिशाम खिफ़ाश से कह रहा था

" रात के अंधेरे में उन्हें ढूँढना मुश्किल होगा। क्यों न दिन के उजाले का इंतज़ार किया जाए? खिफ़ाश ने नाराज़गी से जवाब दिया,

मैंने खरीदार को समय दिया है। तुम्हें नहीं पता कि हमें पैसे की सख्त ज़रूरत है। एक आखिरी कोशिश करो।

एक बार फिर वे लोग इधर-उधर बिखर गए। गड्ढे से निकलते ही आमिर ने अम्मार से कहा, एक आखिरी कोशिश करनी चाहिए।

अम्मार ने कहा, "वह क्या है?"

हमें तुरंत बस तक पहुंचना है। अगर कार के ड्राइवर ने चाबी इग्निशन में छोड़ दी है, तो हम आसानी से भाग सकते हैं। जब तक ये लोग इंजन स्टार्ट होने की आवाज़ सुनेंगे, हम बस के साथ भाग चुके होंगे?

उन्होंने मरे हुए साँप पर नज़र डाली। नेवला उसे खाकर अपने बिल में चला गया था। दोनों भाई गड्ढे से रेंगते हुए बाहर निकले और सैनिकों की तरह पेट के बल बस की तरफ़ रेंगने लगे। वहाँ कोई नहीं था। वे दोनों ऊपर चढ़े और बस में घुस गए। लेकिन यह उनकी बदकिस्मती थी कि चाबी इग्निशन में नहीं थी। आमिर ने गहरी साँस ली और कहा, "किस्मत हमेशा साथ नहीं देती।"

"क्यों नहीं देती — होश हवास दुरुस्त हों तो रास्ता मिल ही जाता है।"

आमिर ने सवाल किया, "तुमने कुछ सोच लिया है?"

अम्मार ने जवाब दिया, "हमें बस की छत पर लेट जाना चाहिए—यही एक सूरत इस मौत के सहरा (रेगिस्तान) से बचकर निकलने की है।"

इससे पहले कि आमिर कोई जवाब देता, उन्होंने खफ़ाश की आवाज़ सुनी—वह कह रहा था, "इनको मौत के इस सहरा के हवाले कर दो—दिन में सूरज की तपिश और भूख- प्यास , इन्हें अगले जहान में पहुँचा देगी।"

दोनों भाई बस की छत पर आराम से लेटे हुए थे—जब चोर बस में सवार हो गए तो सफर दोबारा शुरू हो गया।

आमिर ने सरगोशी में अम्मार से पूछा, "रात के अंधेरे ने तो हमें छुपा लिया, उजाला होने के बाद क्या होगा?"

अम्मार ने जवाब दिया, "उजाला होने से पहले ही हम नीचे कूद जाएँगे।"

अचानक उनके पाँवों को लकड़ी के किसी संदूक से ठोकर लगी—उन्होंने टटोल कर देखा तो उनके मुँह से चीख निकलते-निकलते रह गई—यह वही संदूक था जिसके अंदर वो मूर्ति बंद करके श्रीलंका से रवाना हुए थे।

आमिर ने कहा, "इसका मतलब यह है कि बक्सा एस्कंदरिया की बंदरगाह पर बदला गया है।"

अम्मार ने जवाब दिया, "मेरा तो ख्याल है कि जिस संदूक को लेकर हम श्रीलंका से रवाना हुए थे, वो शुरू में ही तब्दील हो चुका था—इसलिए उस पर पतरे चढ़ाये गए थे ताकि हम रास्ते में उसे खोल कर चेक न कर सकें और..."

आमिर ने जल्दी से अम्मार की बात काटते हुए सरगोशी की, "हम दोनों ही अहमक हैं—शायद तुम्हें इस बस का नंबर याद न हो—लेकिन मेरे ज़हन में महफूज है। यह बस भी उसी जहाज में श्रीलंका से आई है, और इसी बस के किसी गुप्त हिस्से में यह बक्सा हमारे साथ सफर करता हुआ मिस्र आया है।"

बस अंधेरे में एक क्षतिग्रस्त इमारत के करीब रुक गई। खफ़ाश, हिशाम और काहिरा वाला दुकानदार बस से अंधेरे में बाहर आए।

खफ़ाश ने कहा, "मेरा एक साथी यहाँ मौजूद है—उसने इस मूर्ति का सौदा कर रखा है। हमें उससे रकम के बारे में मालूम करना होगा कि उसने वसूल कर ली है या नहीं— खरीदार ने यह रकम लक्सर में अदा करने के लिए कहा था।"

उसने अपना सिगरेट लाइटर निकालकर तीन मर्तबा जलाया और बुझाया—दूसरी तरफ से भी एक चिंगारी तीन बार जलती-बुझती नजर आई और फिर फरौन के उस क्षतिग्रस्त मकबरे यानी पिरामिड के पीछे से एक साया निकलकर बस की तरफ आया। ज्यों ही वह साया इन लोगों के करीब आया, वे उसे देखकर हैरान रह गए—यह एलिस थी।

अम्मार ने दांत पीस कर कहा, "यह कमबख्त रुबासा से आकर यहाँ छिप गई थी।"

एलिस के आते ही खफ़ाश ने बेसब्री से सवाल किया, "रकम का क्या हुआ?"

" खरीदार चाहता है कि हम इस मूर्ति की हिफाजत से उसके घर तक पहुँचा दें—वो लक्सर की बजाय काहिरा में ही रकम अदा करना चाहता है—वैसे वो यहाँ आने वाला है—और हाँ, वो दोनों जासूस कहाँ हैं?"

खफ़ाश ने जल कर जवाब दिया, "इनकी कब्र तो सहरा (रेगिस्तान) में बन चुकी होगी।"

एलिस ने दांत पीस कर कहा, "तुमने इन सप्पोलियों को छोड़कर बहुत बड़ी गलती की है—खैर, अब जितनी जल्दी हो सके, मूर्ति के संदूक को ऊपर से उतार कर दोबारा उसी गुप्त हिस्से में रख दो।"

इससे पहले कि ये लोग बस की छत पर पहुँचें, दोनों भाई जल्दी से दूसरी तरफ उतर गए। खफ़ाश, हिशाम और उनके साथियों ने मूर्ति का बक्सा ऊपर से उतारा और उसे बस के फर्श के नीचे बने हुए गुप्त तहखाने में दाखिल कर दिया।

अम्मार ने कहा, "अब मालूम हुआ कि जहाज में खफ़ाश मूर्ति के भेष में कहाँ गायब हो जाता था—वह यकीनन यही जगह थी।"

अम्मार ने जवाब दिया, "तुम्हारा ख्याल दुरुस्त है—मैंने खुद उसका पीछा करते हुए उसे इसी बस में दाखिल होते देखा था—लेकिन बाद में वह गायब हो गया था—शायद इसी गुप्त ठिकाने में जा छुपा होगा।"

गिरोह के लोग मूर्ति के संदूक को बस के गुप्त खाने में रखने में व्यस्त थे कि दूर से किसी कार की हेड लाइट्स चमकती दिखाई दीं।

एलिस ने आगे बढ़कर अपना लाइटर तीन बार जलाया-बुझाया। कार इन लोगों से थोड़े फासले पर आकर रुक गई।

इस बार कार में से जो आदमी बाहर आया, उसे देखकर आमिर और अम्मार के दिमागों में बम का धमाका हुआ—यह आदमी काहिरा के अजायब घर का इंचार्ज प्रोफेसर जलाल अमीन था!

वे करीब आकर खफ़ाश और गिरोह के दूसरे आदमियों से चुपके-चुपके बातें करने लगे। मौका जान कर दोनों भाई प्रोफेसर की कार की डिक्की में छुप गए।

खेल खत्म

प्रोफेसर की कार रात की तारीख़ी अंधेरी में तेजी से काहिरा की तरफ चली जा रही थी। कभी कभी आमिर डिक्की का ढक्कन उठाकर बाहर झाँक रहा था। सफर काफी देर जारी रहा और आखिरकार कार एक झटके के साथ रुक गई। आमिर ने डिक्की खोलकर बाहर झाँका—उसे अंधेरे में जगमगाती हुई काहिरा की बुलंद व बाला इमारतें नज़र आईं। कार चौराहे पर ट्रैफिक की लाल बत्ती की वजह से रुकी थी—मौका जान कर दोनों भाई डिक्की से नीचे कूद गए।

हरी रोशनी होते ही प्रोफेसर की कार फर्राटे भरती गुजर गई। आमिर ने करीब से गुजरती हुई एक टैक्सी को हाथ देकर रोका और फिर ड्राइवर से पुलिस हेड क्वार्टर चलने को कहा। टैक्सी ड्राइवर ने मीटर डाउन किया और दो-तीन सड़कों से गुजरने के बाद एक काले पत्थर की इमारत के बाहर टैक्सी को रोक दिया। इमारत के गेट पर मोटा-मोटा लिखा हुआ था:

पुलिस हेड क्वार्टर - काहिरा

ड्यूटी ऑफिसर ने जल्द ही दोनों को अंदर बुला लिया। आमिर और अम्मार ने अपना परिचय कराया और फिर पुलिस चीफ से मिलने की इच्छा प्रकट की।

ड्यूटी ऑफिसर ने फोन पर बात करके रिसीवर आमिर के हाथ में दे दिया। आमिर ने तमाम वाक़यात पुलिस चीफ को बताए और कहा कि अगर वो चाहें तो उनके संबंध में काहिरा में पाकिस्तान के राजदूत से सत्यापन कर सकते हैं।

पुलिस चीफ ने जवाब दिया, "अपनी तसल्ली करने के बाद...-पुलिस फोर्स के साथ मैं तुम्हें इसी दफ्तर में मिलूँगा। मामला संगीन है। प्रोफेसर जलाल अमीन इस शहर की नामवर शख्सियतों में से हैं—इसलिए उनके मकान पर छापा मारने से पहले मुझे ऊपर से इजाजत लेनी पड़ेगी । मुझे हैरानी है किखुद प्रोफेसर इस मूतआरटीआई कि चोरी कि रिपोर्ट लिखा चुके हैं । तुम दोनों के बारे में रुबासा के पुलिस चीफ का फोन भी मुझे मिल चुका है।"

ड्यूटी ऑफिसर ने दोनों के लिए गर्म-गर्म कॉफी मंगवाई। दोनों सर्दी से कांप रहे थे। लेकिन उस वक्त उनके सर पर एक ही धुन सवार थी, और वो थी प्रोफेसर जलाल अमीन की कोठी पर पुलिस का छापा।

आधे घंटे बाद उन्होंने इमारत के कंपाउंड में हार्न की आवाज सुनी। उन्हें एक कांस्टेबल ने आकर सूचित किया कि उन्हें नीचे पुलिस चीफ बुला रहे हैं। वो नीचे आए तो उन्होंने असले से लैस पुलिस का दस्ता देखा जो एक ट्रक में सवार था।

चीफ ने दोनों भाइयों को अपनी जीप में बिठा लिया, और फिर ये पुलिस पार्टी तेजी से रवाना हो गई। रास्ते में पुलिस चीफ ने इन्हें बताया कि काहिरा में पाकिस्तान के राजदूत ने...मुझसे तुम्हारी मदद करने के लिए कहा है।

प्रोफेसर जलाल अमीन अपनी शान-दार कोठी के विशाल लाउन में टहल रहा था। उसे उस बस का इंतजार था जो खफ़ाश, एलिस, हिशाम के अलावा मूर्ति का बक्स लेकर आने वाली थी।

दूसरी तरफ पुलिस ने कोठी से कुछ फासले पर अपना ट्रक और जीप छोड़ दी और चीफ के हुक्म पर कोठी को चारों तरफ से घेर लिया। हवेली के फाटक के बाहर बैठा चौकीदार ऊंघ रहा था और आसमान पर बिखरी हुई रात की सियाही अब आहिस्ता-आहिस्ता उजाले में बदल रही थी। पुलिस वाले बस के प्रतीक्षा में थे कि अचानक चोरों की बस एक तरफ से आती दिखाई दी। पुलिस चीफ के इशारे पर तमाम सिपाही तैयार हो गए। बस की हैडलाइट्स कोठी के मेन गेट पर पड़ीं तो चौकीदार एक दम उठकर खड़ा हो गया और लोहे के बड़े दरवाजे को खोल दिया। बस हवेली के आँगन के अंदर दाखिल हो गई।

चोरों ने मिलकर मूर्ति का बक्स बस के गुप्त खाने में से निकाला और फिर प्रोफेसर के पीछे कोठी के अंदर दाखिल होकर तहखाने की सीढ़ियाँ उतरने लगे। तहखाना...

एक बड़ा सा हाल था जहाँ विभिन्न किस्म की मूर्तियाँ, अजीब व गरीब बर्तन और शाही लिबासों के अलावा वो पाँच मूर्तियाँ भी रखी थीं जो श्रीलंका के म्यूजियम से चोरी हुई थीं। प्रोफेसर की मौजूदगी में संदूक खोला गया, जिसमें से महात्मा बुद्ध की सोने की चमकती हुई कद आदम मूर्ति बरामद हुई।

प्रोफेसर ने इत्मीनान करने के बाद अपना ब्रीफकेस खोला जो नोटों से भरा हुआ था। ठीक उसी समय तहखाने की पथरीली सीढ़ियों पर भारी जूतों की आवाज ने सबको चौंका दिया। ये पुलिस के सिपाही थे। पुलिस चीफ ने रिवॉल्वर हाथ में ले रखा था। सिपाही बंदूकों से लैस थे।

अब चोरों के लिए भागने की कोई राह न थी।

पुलिस चीफ ने प्रोफेसर को मुखातिब करते हुए कहा: "खेल खत्म हो गया है, प्रोफेसर। हैरत है कि इस मुल्क का इतना अहम और जिम्मेदार/प्रतिष्ठित आदमी ये गुल खिला रहा है।"

फिर उस से पहले कि चोरों और प्रोफेसर की गिरफ्तारी होती वहाँ पर मौजूद सब लोगों पर हैरत का पहाड़ टूट पड़ा। एक कोने से दूसरा प्रोफेसर जलाल अमीन निकल कर सामने आ गया। सब लोग हैरत से कभी ब्रीफकेस वाले प्रोफेसर को...

और कभी कोने में खड़े वास्तविक प्रोफेसर को देखने लगे। पुलिस प्रमुख ने पूछा, "यह सब क्या है? तुम में से असली प्रोफेसर कौन है?"

उसी क्षण ब्रीफकेस वाले प्रोफेसर ने अपने चेहरे से मेकअप हटा दिया—अब उनके सामने पाकिस्तान के प्रसिद्ध जासूस शहाब ज़ैदी खड़े थे। शहाब ज़ैदी ने पुलिस प्रमुख से संबोधित होकर कहा: "सर! मेरे आदरणीय प्रोफेसर जलाल अमीन का व्यक्तित्व हर प्रकार के अपराधों से मुक्त है—मैं इनका आभारी हूँ कि इन्होंने मेरी भरपूर सहायता की और अपने संग्रहालय से ये तमाम पुरावशेष यहाँ लाने की अनुमति दी।"

पुलिस प्रमुख ने प्रोफेसर से कहा, "मैंने जो अनुचित शब्द आपकी शान में कहे हैं, उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।"

और फिर उसने शहाब साहब से प्रश्न किया कि अंततः आपने इस गिरोह को कैसे जाल में फँसाया?

शहाब ज़ैदी ने उत्तर दिया, "मैं बहुत पहले से रुबासा में इनकी गतिविधियों पर नज़र रखे हुए था—रुबासा में मेरे दोनों बेटों की वजह से गिरोह...

के कुछ सदस्यों की गिरफ्तारियाँ अमल में आईं। किंतु मिस एलिस, जो इस गिरोह की सक्रिय सदस्य है, फरार होने में सफल हो गई—श्रीलंका के संग्रहालय से खफ्फाश पहले ही फरार हो चुका था। मैंने रुबासा के आसपास एलिस की तलाश जारी रखी और फिर सौभाग्य से एक मिस्री सौदागर के घर मेरी उससे भेंट हो गई। एलिस मुझसे परिचित नहीं थी—किंतु मैं उसे जानता था। मैं छाया की तरह उसके आसपास रहा और फिर एक सौदागर के माध्यम से उसकी दावत पर प्रोफेसर की कोठी में, अंदर—वे तमाम वस्तुएँ जो मैंने काहिरा के संग्रहालय से प्रोफेसर की अनुमति से यहाँ सजा दी थीं, उसे दिखाईं और स्वयं को ऐतिहासिक तथा कीमती वस्तुओं का बहुत बड़ा तस्कर प्रदर्शित किया। मेरे बिछाए हुए जाल में एलिस फँस गई। दो-तीन मुलाकातों में ही उसने महात्मा बुद्ध की सुनहरी मूर्ति का सौदा मुझसे कर लिया—उसी के माध्यम से मैं गिरोह के अन्य सदस्यों खफ्फाश, हिशाम और कृत्रिम चेहरे बनाने वाले उस दुकानदार से मिला और अंततः इस गिरोह को काहिरा से लक्सर लाने में सफल हो गया। इस दौरान...

मैंने अपने दोनों बेटों के कार्य पर भी दृष्टि रखी जो इस गिरोह में फँसे हुए थे।

सभी पुलिसकर्मियों और वास्तविक प्रोफेसर ने तालियाँ बजाकर शहाब ज़ैदी की सेवाओं की सराहना की।

शहाब ज़ैदी ने खफ्फाश को संबोधित करके कहा, "अब जबकि तुम और तुम्हारा गिरोह पुलिस की हिरासत में आ चुका है, क्या तुम यह बताना पसंद करोगे कि तुम लोगों ने इस मूर्ति को किस प्रकार प्राप्त किया?"

खफ्फाश ने कहा, "जैसा कि आपको ज्ञात हो चुका है, श्रीलंका के संग्रहालय में जितनी भी चोरियाँ हुईं, उनमें मेरा और एलिस का हाथ था। हमारी वारदात का तरीका बहुत ही वैज्ञानिक था—इसलिए श्रीलंका की पुलिस को हम पर ज़रा भी संदेह नहीं हुआ—इस मूर्ति से संबंधित सभी अफवाहें हमारी ही फैलाई हुई थीं और हमने श्रीलंका की जनता की धार्मिक भावनाओं से पूरा-पूरा लाभ उठाया—जिस बढ़ई से मिस्टर जोन ने मूर्ति के लिए यह बक्सा तैयार करवाया था, वह हमारा ही आदमी था—उसने एक ही प्रकार के दो बक्से तैयार किए थे—एक संग्रहालय में था और दूसरा हमारे पास..."

मिस्टर जॉन और जमाल अनवर को कॉफी में जहर भी हमारी सुनियोजित योजना के तहत ही दिया गया था।

हम इन दोनों को केवल एक दिन के लिए संग्रहालय से हटाना चाहते थे, और संग्रहालय के इंचार्ज सुदर्त पहले ही वहाँ से जा चुके थे।

उसी रात मैंने आमिर और अम्मार का ध्यान मूर्ति के बक्से से हटाने के लिए, मूर्ति का मास्क पहनकर उन्हें डराया तथा अपने पीछे लगकर उन्हें मूर्ति वाले कमरे से बाहर ले गया।

अम्मार पहले से ही गहरी नींद में सोया हुआ था, और मैं मूर्ति का वेश बदलकर आमिर से आँख मिचौली खेलता रहा।

इसके बाद मेरी साथी एलिस ने अपने आदमियों की सहायता से वैसा ही पतरे चढ़ा हुआ खाली बक्सा वहाँ रखकर असली मूर्ति के बक्से को बाहर निकाल लिया, जिसमें भाग्य ने भी हमारा साथ दिया।

जब शहाब ज़ैदी ने पूछा कि वह कैसे, तो एलिस ने बताया कि संयोगवश मिस्टर आमिर मेरा पीछा करते हुए ऐसे मूर्ति से टकरा गए जिसका एक बाजू टूटा हुआ था और वह वैसे ही उसके शरीर से लटका हुआ था।

उनके टकराते ही वह बाजू उनके सिर पर आ गिरा जिससे वे बेहोश हो गए, और उतना समय हमें मूर्ति वाला बक्सा ले जाने के लिए पर्याप्त था।

अम्मार ने प्रश्न किया कि क्या उनका यह अनुमान सही है कि वे अपना बक्सा भी उसी जहाज़ से लेकर मिस्र पहुँचे थे जिससे वे यात्रा कर रहे थे।

शहाब ज़ैदी ने उत्तर दिया कि उनका अनुमान बिल्कुल सही है क्योंकि उन्होंने और उनके साथी हिशाम ने उस जहाज़ पर अपने साथ एक नई बस मिस्र के लिए बुक करवाई थी।

वह बस बाहर आँगन में मौजूद है जिसका फर्श दोहरा है—यानी ऊपर वाले फर्श और नीचे वाले हिस्से के बीच एक खाली स्थान है, और उसी खाली स्थान में मूर्ति वाले बक्से को छुपाया गया था।

शहाब ज़ैदी ने कहा कि अब अंतिम और असली बात भी पुलिस को बता ही दी जाए कि उन्होंने इस मूर्ति की कीमत करोड़ों पाउंड क्यों तय की है।

इस बार एलिस ने उत्तर दिया कि सौदा करते वक्त यह बात वह बता चुकी हैं, तो फिर दोबारा पूछने का क्या उद्देश्य है?

शहाब साहब ने जवाब दिया कि यह बात पुलिस रिकॉर्ड में आ जानी चाहिए और प्रोफेसर जलाल अमीन को भी इसका पता होना चाहिए।

एलिस ने खुलासा किया कि दरअसल इस मूर्ति के सिर में महात्मा बुद्ध की चिता की राख भरी हुई है, जिसके संबंध में बौद्ध अनुयायियों का यह विश्वास है कि इसे पानी में घोलकर पीने से मुर्दे भी जीवित हो जाते हैं।

लोग इस मूर्ति को प्राप्त करने के लिए सैकड़ों वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं, और उन्हें भी इसका ज्ञान एक पुरानी पुस्तक से हुआ था।

चीन, जापान, तिब्बत, नेपाल और ऐसे अन्य तमाम देशों में जहाँ महात्मा बुद्ध के अनुयायी रहते हैं, इस राख की एक चुटकी की कीमत करोड़ों रुपये है।

उसी रात काहिरा के अधिकारियों की तरफ से शहाब ज़ैदी और उनके पुत्रों के सम्मान में एक भव्य दावत दी गई जिसमें उन्होंने दिल खोलकर उनकी प्रशंसा की।

रुबासा की सरकार ने पाकिस्तान सरकार का धन्यवाद किया, जहाँ की बगावत शहाब ज़ैदी, आमिर और अम्मार के कारण असफल हुई थी।

अंततः शहाब साहब ने पाँचों मूर्तियाँ श्रीलंका के राजदूत के सुपुर्द कर दीं और स्वयं अपने बेटों के साथ पाकिस्तान के लिए रवाना हो गए।

***** समाप्त *****

sjeet